# हिन्दी पत्रिका

# “प्रेरणा”

## जुलाई से सितम्बर, 2023

## पंचम संस्करण

## नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# संदेश

यह देखकर खुशी हो रही है कि हम अपनी हिंदी पत्रिका प्रेरणा का 5वां संस्करण लेकर आ रहे हैं। यह अपने आप में हमारी राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कार्यालय इस उद्देश्य के लिए योगदान किए गए लेखों सहित अधिकारियों के अथक परिश्रम की सराहना करता है। यह कार्यालय हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिबद्ध है।

इस कार्यालय ने तीसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और हिंदी दिवस समारोह 2023 में भी भाग लिया, जो 14-15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित किया गया था। यह हमारे लिए अन्य कार्यालयों द्वारा की जा रही प्रचार गतिविधियों को समझने और इस पत्रिका के चौथे संस्करण को वितरित करने का एक अच्छा अवसर था। हम हर रोज एक नये शब्द और शब्द के प्रयोग को बुलेटिन बोर्ड पर भी डाल रहे हैं। इससे हमारे अधिकारियों को अपनी शब्दावली बढ़ाने में मदद मिली है।

जहां तक जुलाई-सितंबर, 2023 की अवधि की बात है, 23 अनुमोदन समिति और प्राधिकरण बैठकें आयोजित की गईं, जिनमें से सभी दस्तावेजो  का अनुवाद हिन्दी मे किया गया। इन बैठकों में जहां 208 निर्णय लिए गए, वहीं अनुवादित शब्दों की कुल संख्या 67132 थी। जुलाई-सितम्बर 2023 की अवधि की दौरान आंचलिक नौएडा एसईजेड का कुल माल निर्यात 4064 करोड़ रुपए, सेवा निर्यात 20825.2 करोड़ रुपए (पिछले वर्ष की समान अवधि से 19% की वृद्धि), डीम्ड  निर्यात 89.5 करोड़ रुपए, घरेलू खरीद 506 करोड़ रूपए, एसईज़ेड से एसईजेड आपूर्ति 100 करोड़ रुपए था।

**ए. बिपिन मेनन**

**विकास आयुक्त**

**नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र**

## 1. माल निर्यात

जुलाई-सितम्बर 2023 के अवधि की दौरान आंचलिक नौएडा एसईजेड का कुल माल निर्यात 4064 करोड़ रुपए था। इन निर्यातों का एसईजेड-प्रज्ञ ब्योरा इस प्रकार है:

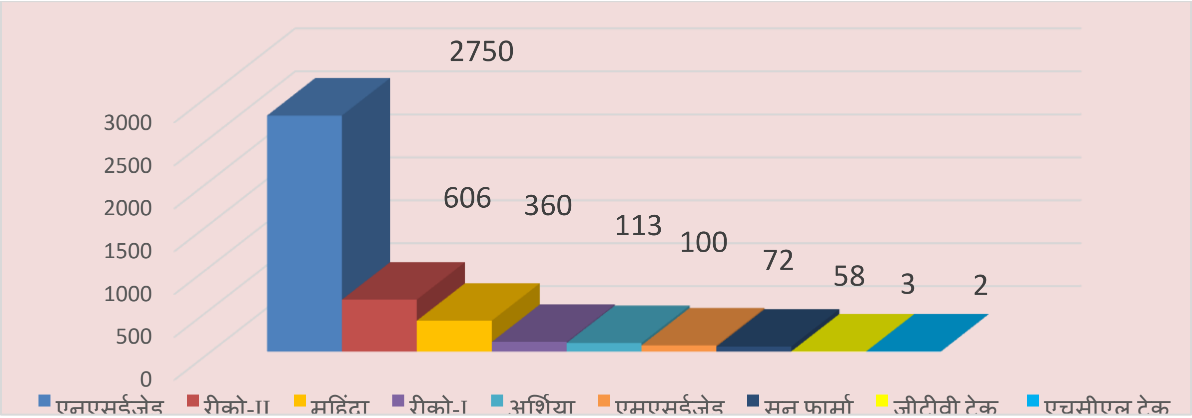


इन व्यापारिक निर्यात के लिए शीर्ष 10 गंतव्यों के प्रथम स्थान पर संयुक्त अरब अमीरात है।

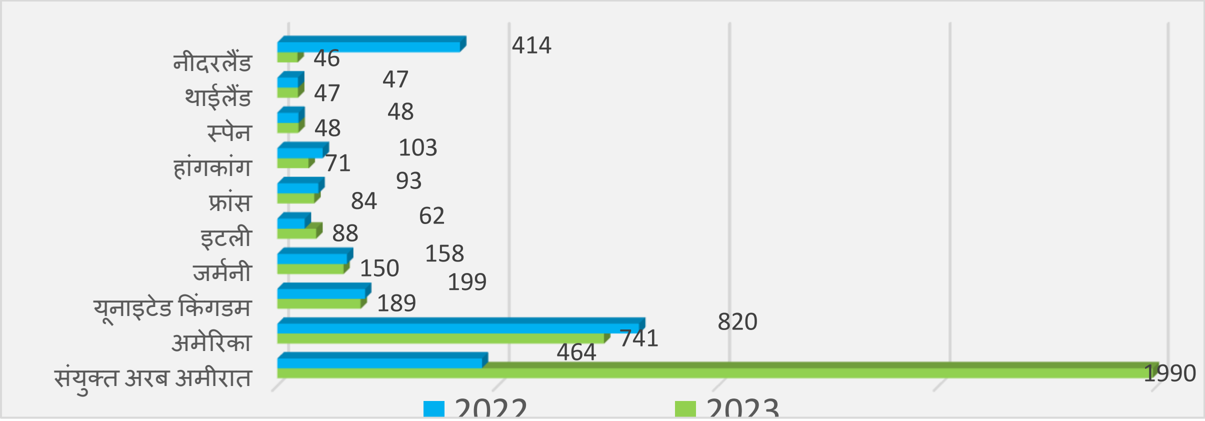


उपरोक्त एसईजेड में इस अवधि के लिए शीर्ष 3 निर्यातक एसईजेड इकाइयां इस प्रकार हैं:

a. **नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र**
   i. एसी इम्पेक्स
   ii. पीसी यूनिवर्सल प्राइवेट लिमिटेड
   iii. आईडेमिया सिसकॉम

b. **जयपुर (सीतापुरा) विशेष आर्थिक क्षेत्र**
   i. आइडियल फिस्कल सर्विसेज लिमिटेड
   ii. वैभव ग्लोबल लिमिटेड
   iii. डेरेवाला ज्वेलरी एमएफजी कंपनी प्राइवेट लिमिटेड

c. **मुरादाबाद विशेष आर्थिक क्षेत्र**
   i. सी एल गुप्ता ओवरसीज एलएलपी
   ii. दीवान इंडिया
   iii. डिज़ाइनर्स इंटरनेशनल

d. **महिंद्रा विशेष आर्थिक क्षेत्र**
   i. मैक्सॉप इंजीनियरिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड
   ii. मरुधर क्वार्ट्ज सर्फेस प्राइवेट लिमिटेड
   iii. ग्लोबल सर्फेस लिमिटेड

e. **अन्य निजी विशेष आर्थिक क्षेत्र**

i. मार्गो इम्पेक्स प्राइवेट लिमिटेड
ii. सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज लिमिटेड-I
iii. अर्शिया लॉजिस्टिक्स सर्विसेज लिमिटेड

## 2. सेवाएं

जुलाई–सितम्बर 2023 की अवधि के दौरान आंचलिक नौएडा एसईजेड का कुल सेवा निर्यात 20825.2 करोड़ रुपए था। यह पिछले वर्ष की समान अवधि से 19% की वृद्धि है जिसमे निर्यात 17459.9 करोड़ रुपए था। सेवाओं का विवरण इस प्रकार है:

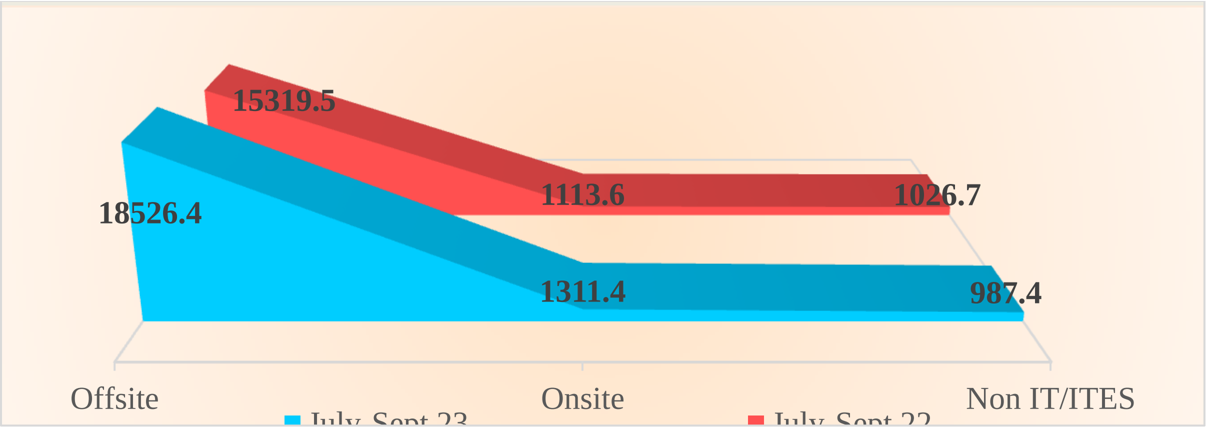


## 3. डीम्ड या मानित निर्यात

जुलाई-सितम्बर 2023 की अवधि के लिए आंचलिक नौएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा किया गया कुल निर्यात 89.5 करोड़ रुपए था। एसईजेड के अनुसार डीम्ड निर्यात इस प्रकार है:

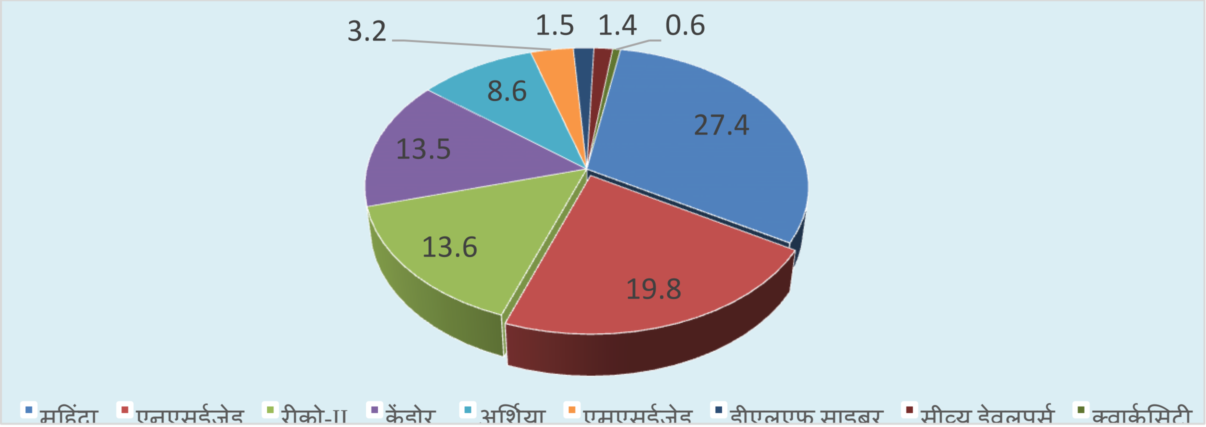


## 4. घरेलू खरीद

जुलाई-सितम्बर 2023 की अवधि के लिए आंचलिक नौएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा की गई कुल घरेलू खरीद 506 करोड़ रूपए थी। यह घरेलू इनपुट (विनिर्माण और सेवा इकाईयों के लिए) की स्रोत का एक उपाय है, जिससे "भारत से मेक इन इंडिया के लिए स्रोत की अवधारणा को बढ़ावा मिलता है। उक्त अवधि के लिए एसईजेड-प्रज्ञ घरेलू खरीद इस प्रकार है:

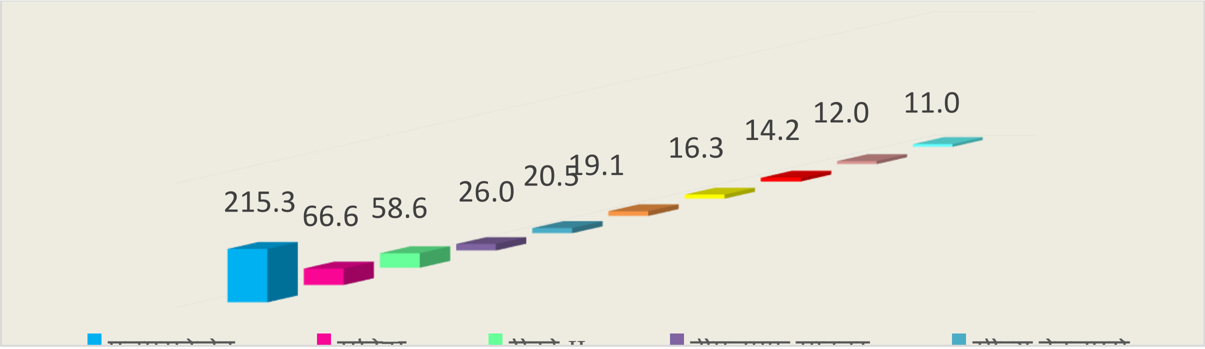


वस्तुओं की क्षेत्रवार शीर्ष घरेलू खरीद इस प्रकार है:

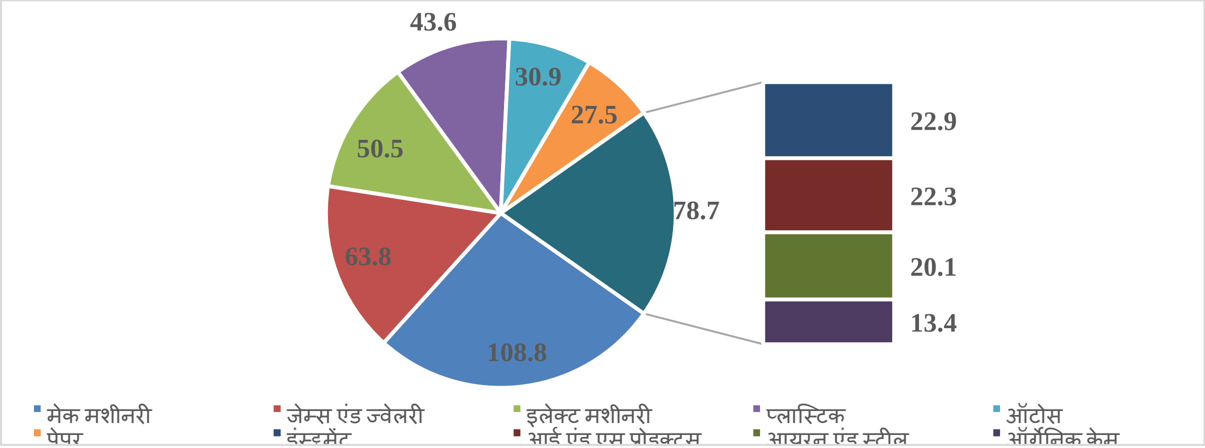


## 5. एसईज़ेड से एसईज़ेड आपूर्ति

जुलाई-सितम्बर 2023 की अवधि के लिए आंचलिक नौएडा एसईजेड के तहत सभी इकाईयों द्वारा की गई कुल एसईजेड आपूर्ति 100 करोड़ रुपए थी। (केवल यदि एसईजेड ऑनलाइन प्रणाली में इकाईयों द्वारा दर्ज किया गया हो)। एसईजेड के अनुसार शीर्ष अपूर्तियां इस प्रकार है:

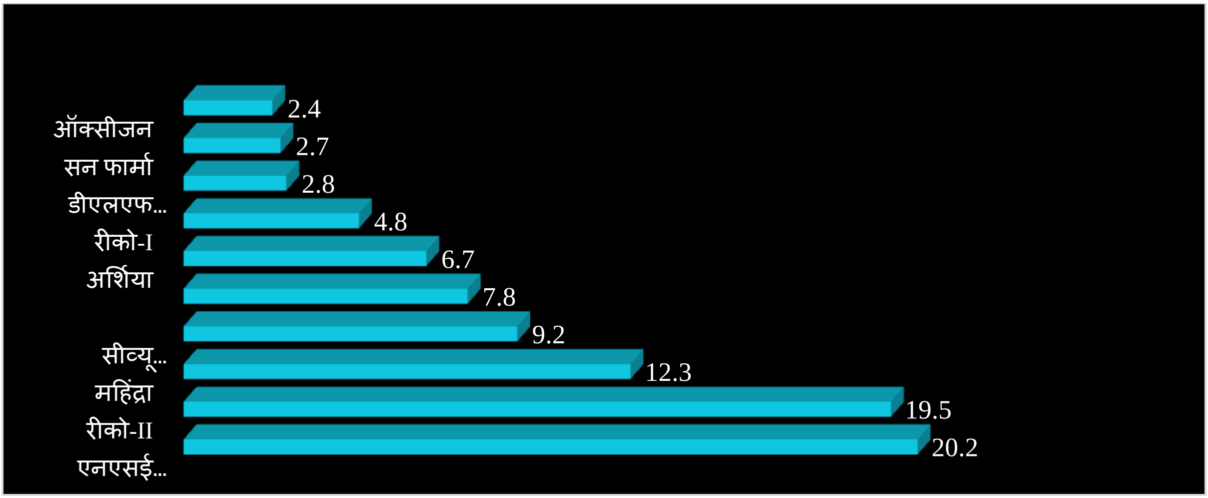


## <u>तिमाही (जुलाई - सितम्बर 2023) के दस्तावेज़ों का अनुवाद का विवरण:</u>

| क्रमांक | जुलाई 2023 | शब्द | निर्णय संख्या |
|---|---|---|---|
| 1 | उत्तर प्रदेश एसईजेड अनुमोदन समिति (07 जुलाई 2023) | 4299 | 13 |
| 2 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (07 जुलाई 2023) | 1550 | 6 |
| 3 | हरियाणा अनुमोदन समिति (07 जुलाई 2023) | 3376 | 16 |
| 4 | मुरादाबाद अनुमोदन समिति (13 जुलाई 2023) | 3624 | 14 |
| 5 | महिंद्रा अनुमोदन समिति (20 जुलाई 2023) | 1467 | 4 |
| 6 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (20 जुलाई 2023) | 1290 | 2 |
| 7 | चंडीगढ़ अनुमोदन समिति (31 जुलाई 2023) | 1514 | 3 |
| 8 | सीतापुरा अनुमोदन समिति (31 जुलाई 2023) | 6021 | 15 |
| **क्रमांक** | **अगस्त 2023** | **शब्द** | **निर्णय संख्या** |
| 1 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (01 अगस्त 2023) | 2364 | 8 |
| 2 | हरियाणा अनुमोदन समिति (03 अगस्त 2023) | 2546 | 11 |
| 3 | उत्तर प्रदेश एसईजेड अनुमोदन समिति (03 अगस्त 2023) | 3606 | 11 |
| 4 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (16 अगस्त 2023) | 3294 | 7 |
| 5 | महिंद्रा अनुमोदन समिति (28 अगस्त 2023) | 1781 | 3 |
| 6 | सीतापुरा अनुमोदन समिति (28 अगस्त 2023) | 1757 | 7 |
| **क्रमांक** | **सितम्बर 2023** | **शब्द** | **निर्णय संख्या** |
| 1 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (05 सितम्बर 2023) | 4072 | 11 |
| 2 | उत्तर प्रदेश निजी एसईजेड अनुमोदन समिति (6 सितम्बर 2023) | 5053 | 18 |
| 3 | हरियाणा अनुमोदन समिति (06 सितम्बर 2023) | 7381 | 22 |
| 4 | मुरादाबाद अनुमोदन समिति (14 सितम्बर 2023) | 905 | 2 |
| 5 | निर्यात उन्मुख इकाई (EOU) अनुमोदन समिति (14 सितम्बर 2023) | 2537 | 3 |
| 6 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र अनुमोदन समिति (19 सितम्बर 2023) | 3318 | 9 |
| 7 | महिंद्रा अनुमोदन समिति (20 सितम्बर 2023) | 1420 | 3 |
| 8 | सीतापुरा अनुमोदन समिति (20 सितम्बर 2023) | 2377 | 9 |
| 9 | नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र प्राधिकरण, नौएडा (27 सितम्बर 2023) | 1580 | 11 |
| | **कुल योग:** | **67132** | **208** |

# हिंदी पखवाड़ा 14 से 30 सितम्बर, 2023

**कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा 14–30 सितम्बर, 2023 के बीच मनाया गया। पखवाड़ा दौरान आयोजित प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं का विवरण निम्ननुसार है।**

## हिंदी मे राजभाषा ज्ञान प्रश्नोतरी प्रतियोगिताः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे.लिपिक | प्रथम | 3,000 / – |
| 2 | श्री अरूण सिंह परिहार, आशुलिपिक– 2 | द्वितीय | 2,500 / – |
| 3. | श्री विपिन शिशोदिया, वरिष्ठ कार्यकारी | तृतीय | 2,000 / – |

## हिंदी में टाइपिंग प्रतियोगिताः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री विपिन शिशोदिया, वरिष्ठ कार्यकारी | प्रथम | 3,000 / – |
| 2 | श्री मोहित चौधरी, वरिष्ठ कार्यकारी | द्वितीय | 2,500 / – |
| 3. | श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक–2 | तृतीय | 2,000 / – |
| 4. | श्री कमल, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000 / – |
| 5. | श्री राजेश चौहान, कार्यकारी | सांत्वना | 1,000 / – |

## हिंदी निबंध प्रतियोगिताः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री विपिन शिशोदिया, वरिष्ठ कार्यकारी | प्रथम | 3,000 / – |
| 2 | श्री जितेन्द्र कुमार, वरिष्ठ कार्यकारी | द्वितीय | 2,500 / – |
| 3. | श्री अजय कुमार मिश्र, वरिष्ठ लेखाधिकारी | तृतीय | 2,000 / – |
| 4. | श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे.लिपिक | तृतीय | 1,000 / – |
| 5. | श्री मोहित चौधरी, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000 / – |
| 6. | श्री आकाश शर्मा, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000 / – |

## हिंदी में आशुलिपिक लेखन प्रतियोगिताः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री विपिन शिशोदिया, वरिष्ठ कार्यकारी | प्रथम | 3,000 / – |
| 2 | श्री जाविर अली, आशुलिपिक–2 | द्वितीय | 2,500 / – |
| 3. | श्री अशोक कुमार, शुक्ल, वरिष्ठ कार्यकारी | तृतीय | 2,000 / – |
| 4. | श्री सोनू कुमार, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000 / – |
| 5. | श्री कमल, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000 / – |

## हिंदी में नोटिंग प्रतियोगिताः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री जाविर अली, आशुलिपिक–2 | प्रथम | 3,000/– |
| 2 | श्रीमति संतोष कुमारी, सहायक | द्वितीय | 2,500/– |
| 3. | श्री मुन्त्याज, सहायक | तृतीय | 2,000/– |
| 4. | श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक–2 | सांत्वना | 1,000/– |
| 5. | श्री श्री अरूण सिंह परिहार, आशुलिपिक – 2 | सांत्वना | 1,000/– |

## हिंदी में भाषण प्रतियोगिताः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे.लिपिक | प्रथम | 3,000/– |
| 2 | श्री आकाश शर्मा, वरिष्ठ कार्यकारी | द्वितीय | 2,500/– |
| 3. | श्री भारत भूषण, सहायक | तृतीय | 2,000/– |
| 4. | श्री जाविर अली, आशुलिपिक–2 | सांत्वना | 1,000/– |
| 5. | श्री मोहित चौधरी, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000/– |

## हिंदी में वाद–विवाद प्रतियोगिमाः–

| क.स. | कर्मचारी का नाम | श्रेणी | पुरस्कार (रू.मे) |
|---|---|---|---|
| 1. | श्री भारत भूषण, सहायक | प्रथम | 3,000/– |
| 2 | श्री अनुज दीक्षित, उ.श्रे.लिपिक | द्वितीय | 2,500/– |
| 3. | श्रीमति करूणा गाबा, वरिष्ठ कार्यकारी | तृतीय | 2,000/– |
| 4. | श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक–2 | सांत्वना | 1,000/– |
| 5. | श्री मोहित चौधरी, वरिष्ठ कार्यकारी | सांत्वना | 1,000/– |

## पखवाड़ा के दौरान हिंदी में डिक्टेशन प्रतियोगिता (अधिकारी वर्ग):–

| क.स. | अधिकारी का नाम | पुरस्कार राशि (रू.मे) |
|---|---|---|
| 1. | श्री प्रमोद कुमार, सहायक विकास आयुक्त | 4,000/– |
| 2. | श्री हरि किशन मीना, सहायक विकास आयुक्त | 4,000/– |
| 3. | श्री राजेन्द्र मोहन कश्यप, सहायक विकास आयुक्त | 4,000/– |
| 4. | श्री प्रकाश चंद उपाध्याय, सहायक विकास आयुक्त | 4,000/– |

## स्टाफ के आश्रितों के लिए 10वी व 12वी में हिंदी विषय में प्राप्तांक पर प्रोत्साहन पुरस्कार

| | | |
|---|---|---|
| 1. | यशिका रूहेला पुत्री श्री मोहन वीर रूहेला, सहायक | 4,000/– |

# कोच्चि-मुन्नार-अलेप्पी-त्रिवेंद्रम यात्रा वृतांत

केंद्रीय सचिवालय सेवा के उप सचिव के पद पर पदोन्नति के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण के दौरान, मैंने अपने प्रशिक्षण सहकर्मियों के साथ कोचीन, मुन्नार, अलेप्पी और त्रिवेन्द्रम का दौरा सितंबर माह में किया था। मैं इस दौरे पर अपने अनुभव और अवलोकन साझा कर रहा हूं।

हमारे यात्रा कार्यक्रम की पहली संस्थागत यात्रा कोचीन विशेष आर्थिक क्षेत्र (सीएसईजेड) की थी जो भारत सरकार के वाणिज्य विभाग का एक अधीनस्थ कार्यालय है। उप विकास आयुक्त ने शनिवार को भी सीएसईजेड कार्यालय में हमारी मेजबानी की और वह भी ओणम के ठीक बाद, जो केरल का एक राज्य त्योहार है और अधिकांश सरकारी अधिकारी छुट्टी पर रहते हैं। सहायक विकास आयुक्त सीएसईजेड ने सीएसईजेड की कार्यप्रणाली पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। कोचीन विशेष आर्थिक क्षेत्र, केंद्र सरकार के स्वामित्व वाले सात क्षेत्रों

में से एक, कोचीन में स्थित है। विशेष आर्थिक क्षेत्र का उद्देश्य विनिर्माण को बढ़ावा देने, निर्यात बढ़ाने और रोजगार पैदा करने के लिए एक परिचालन वातावरण प्रदान करना है।

कोचीन एसईज़ेड सुनिश्चित जल आपूर्ति, दूरसंचार, वैश्विक कनेक्टिविटी नेटवर्क, बैंकिंग सुविधाएं, विद्युत वितरण नेटवर्क, आम अपशिष्ट उपचार संयंत्र और नागरिक संरचनाओं को अपग्रेड करने जैसे बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण अंतराल को पाटकर व्यापार के लिए बहुत आवश्यक ढांचागत समर्थन भी प्रदान करता है। इसमें केवी सबस्टेशन और आरएमयू आधारित बिजली वितरण 11/110 एमवीए 25 बैकबोन से संचालित होती है-प्रणाली है जो केरल की पावर, जो इसे लगभग असफ ित बिजली देती है। सीएसईजेड भभारत त का एकमात्र एसईजेड है जो क्षेत्र के भीतर बिजली वितरित करता है। ज़ोन में साइट पर चौबीसों घंटे सीमा शुल्क मंजूरी उपलब्ध है। वीएसएनएल 15 जीबीपीएस गेटवे की ज़ोन में स्थापना है और यह उपयोगकर्ताओं को ऑप्टिकल फाइबर केबल के माध्यम से इंटरनेट कनेक्शन प्रदान कर सकता है। ज़ोन में एक अत्याधुनिक लाइन टेलीफोन एक्सचेंज 1000, एक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग स्टूडियो, एक विदेशी डाकघर, एसबीआई ऑफ शोर

बैंकिंग इकाई, एक स्वास्थ्य औषधालय और एटीएम सुविधाओं के साथ भारतीय स्टेट बैंक और इंडसइंड बैंक की शाखाएं हैं। SEZ की अधिकतम संख्या IT/ITES क्षेत्र की है, जिनमें से अधिकांश बैंगलोर में स्थित हैं। 240267.के दौरान क्षेत्र से निर्यात रु 23-2022 करोड़

लाख है। एसईजेड में प्रस्तुतिकरण के बाद हमने सीएसईजेड में स्थित एक कपड़ा इकाई का दौरा किया। इकाई 4.90 और सृजित रोजगार डब्ल्यूएफबी बेयर्ड एंड कंपनी लिमिटेड थी। इसकी आयरलैंड, भारत और पोलैंड में विनिर्माण इकाइयाँ हैं और यह दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी लिनन विनिर्माण कंपनियों में से एक है जो भारत सहित संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और एशिया में प्रमुख उच्चस्तरीय डिजाइनरों-, ब्रांडों और खुदरा विक्रेताओं को आयरिश लिनन की आपूर्ति करती है। इकाई के प्रतिनिधि ने बताया कि इकाई से वार्षिक निर्यात लगभग रु 400 . करोड़ और उन्होंने यूनिट में कर्मचारियों को नियुक्त किया है। 400 कोचीन एसईजेड की यात्रा के बाद हम मुन्नार के लिए रवाना हुए। कोचीन से मुन्नार की यात्रा सुरम्य और रोमांचक रही है। हालाँकि, सर्पीन चढ़ाई के कारण उनके पेट में मरोड़ होने के कारण कुछ सहकर्मी बीमार हो गए। मुन्नार समुद्र तल से1 , 600मीटर की ऊंचाई पर मुद्रापुझा, नल्लाथन्नी और कुंडला पहाड़ियों के संगम पर स्थित है। यह कभी दक्षिण भारत में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार का ग्रीष्मकालीन रिज़ॉर्ट था। यहां के जंगलों और घास के मैदानों में पाई जाने वाली विदेशी वनस्पतियों में नीलकुरिंजी भी शामिल है। यह फूल जो हर बारह साल में एक बार पहाड़ियों को नीला कर देता है, अगली बार 2030में खिलेगा। मुन्नार में दक्षिण भारत की सबसे ऊंची चोटी, अनामुडी भी है, जो 2, 695मीटर से अधिक ऊंची है। मुन्नार अपनी हरी-भरी हरियाली, चाय के बागानों और प्राकृतिक परिदृश्यों के लिए जाना जाता है

मुन्नार में हमने एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान, चाय संग्रहालय, सरकारी वनस्पति उद्यान का दौरा किया। एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान का प्रबंधन केरल वन और वन्यजीव विभाग, मुन्नार वन्यजीव प्रभाग द्वारा किया जाता है।

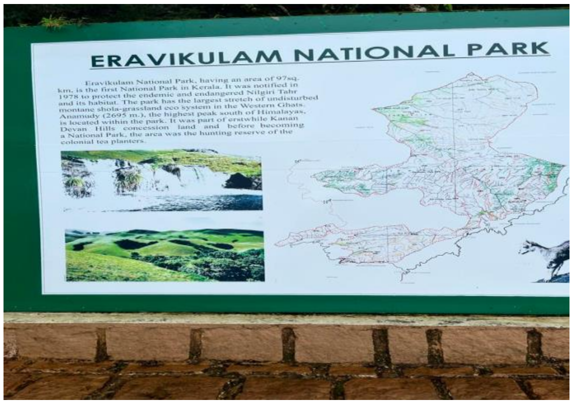

मुन्नार में हमने चाय संग्रहालय का भी दौरा किया जहां हमने चाय प्रसंस्करण के बारे में सीखा। संग्रहालय के प्रतिनिधि ने हमें सफेद, हरी, काली चाय और डस्ट टी, इसकी तैयारी में शामिल प्रक्रिया, सफेद और हरी चाय के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जानकारी दी।

चाय बनाने की प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले उपकरण प्रदर्शन पर थे और प्रक्रिया को प्रदर्शित करने के लिए उनका उपयोग किया गया है।

मुन्नार चाय बागानों के लिए प्रसिद्ध है और शहर की अर्थव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। यह न केवल राज्य की कमाई में इजाफा करता है बल्कि क्षेत्र में रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण और प्रमुख योगदानकर्ता है।
हमने मुन्नार में सरकारी वनस्पति उद्यान का भी दौरा किया। स्थानीय वनस्पतियों के संरक्षण को बढ़ावा देने और पश्चिमी घाट, जहां मुन्नार स्थित है, की समृद्ध जैव विविधता के बारे में आगंतुकों को शिक्षित करने के लिए 1990 के दशक के अंत में केरल वन विकास निगम (KFDC) द्वारा स्थापित किया गया था।

यह उद्यान दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों सहित विभिन्न प्रकार के पौधों का घर है। यह देशी और विदेशी पौधों की प्रजातियों, औषधीय जड़ी-बूटियों और मसालों का विविध संग्रह प्रदर्शित करता है। उद्यान को विभिन्न प्रकार के पौधों वाले खंडों में विभाजित किया गया है, जो इसे प्रकृति प्रेमियों और वनस्पति विज्ञान प्रेमियों के लिए एक शानदार जगह बनाता है। मुन्नार बॉटनिकल गार्डन के कुछ आकर्षणों में एक गुलाब उद्यान, एक फ़र्न उद्यान, एक कैक्टस उद्यान और एक तितली उद्यान शामिल हैं। ये थीम वाले अनुभाग विभिन्न प्रकार के पौधों और उनके पारिस्थितिक महत्व के बारे में जानने का एक अनूठा अनुभव और अवसर प्रदान करते हैं। बगीचे का एक मुख्य आकर्षण ऑर्किडेरियम है, जिसमें दुर्लभ और रंगीन ऑर्किड प्रजातियों का एक शानदार संग्रह है। यह उद्यान देशी पौधों की प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और वनस्पतिशास्त्रियों और वैज्ञानिकों के लिए एक अनुसंधान केंद्र के रूप में कार्य

करता है। यह पश्चिमी घाट के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, मुन्नार के बाद हम अलेप्पी के लिए रवाना हुए, जिसे अलाप्पुझा के नाम से भी जाना जाता है, यह शहर अपने बैकवाटर और हाउस बोट के लिए प्रसिद्ध है। यह नहरों, बैकवाटर, समुद्र तटों और लैगून वाला एक शहर है, अलाप्पुझा को

20 वीं शताब्दी की शुरुआत में भारत के वायसराय जॉर्ज कर्जन ने "पूर्व का वेनिस" के रूप में वर्णित किया था। इसे केरल की "वेनिस राजधानी" के रूप में भी जाना जाता है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता मंत्रमुग्ध कर देने वाली है और बैकवाटर आकर्षक है।

अलेप्पी में मेरे अवलोकनों की मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

- अलेप्पी अपने बैकवाटर के जटिल नेटवर्क के लिए प्रसिद्ध है, जो महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र हैं। यह हमें इन नाजुक वातावरणों को संरक्षित करने के महत्व और प्रदूषण और आवास विनाश के कारण उनके सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में सिखाता है।
- अल्लेप्पी की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मैंने स्थानीय समुदायों पर पर्यटन के प्रभाव, रोजगार सृजन और पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक विकास को संतुलित करने की चुनौतियों के बारे में देखा।
- अलेप्पी अपने पारंपरिक हाउसबोट के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र में परिवहन और पर्यटन के इतिहास की जानकारी देता है।
- यह एलेप्पी में जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं, जैसे अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरण-अनुकूल आवास के बारे में जानने का अवसर प्रदान करता है।
- जलवायु परिवर्तन और समुद्र-स्तर में वृद्धि के प्रति क्षेत्र की संवेदनशीलता पर्यावरण संरक्षण और अनुकूलन रणनीतियों में एक सबक प्रदान करती है।
- अलेप्पी में जलमार्ग परिवहन बुनियादी ढांचा अद्वितीय है और यह स्थानीय लोगों को कुशल परिवहन प्रदान करता है और क्षेत्र के विकास में योगदान देता है।

अल्लेप्पी से, हमने केरल की राजधानी - तिरुवनंतपुरम का दौरा किया। यहां हमने कोवलम बीच, पद्मनाभस्वामी मंदिर और लूलू मॉल का दौरा किया। तिरुवनंतपुरम में मेरे अवलोकनों की मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

- तिरुवनंतपुरम अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, जिसमें कथकली जैसे शास्त्रीय नृत्य और पारंपरिक संगीत शामिल हैं।
- यह शहर पद्मनाभस्वामी मंदिर और पूर्वी किले जैसे ऐतिहासिक स्थलों का घर है। मैंने पद्मनाभस्वामी मंदिर का दौरा किया जिससे मुझे इस ऐतिहासिक स्थल के ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व के बारे में जानकारी मिली।

पद्मनाभस्वामी मंदिर

- तिरुवनंतपुरम कई प्रमुख शैक्षिक और अनुसंधान संस्थानों की मेजबानी करता है, जिसमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और विभिन्न विश्वविद्यालय शामिल हैं।
- कृषि, पर्यटन और सेवाओं पर ध्यान देने के साथ केरल की अर्थव्यवस्था विविध है।
- केरल अपनी स्वास्थ्य सुविधाओं और पारंपरिक आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए जाना जाता है। मैंने पारंपरिक योग और मालिश का अनुभव किया।
- राज्य में चिकित्सा और स्वास्थ्य पर्यटन के लिए इसमें काफी संभावनाएं हैं, जिसे पोषित और विकसित करने की जरूरत है।
- केरल प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है और तिरुवनंतपुरम भी इसका अपवाद नहीं है। मैंने इसके बारे में किताबों में पढ़ा है और टेलीविजन या फिल्मों में देखा है। इस बार मैंने क्षेत्र के हरे-भरे परिदृश्यों, समुद्र तटों और वन्य जीवन और संरक्षण प्रयासों के महत्व के बारे में प्रत्यक्ष रूप से देखा और सीखा है।
- केरल व्यंजन अपने अनूठे स्वाद और मसालों के उपयोग के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें से अधिकांश राज्य में ही उत्पादित होते हैं।

रास्ते में खाया पारंपरिक केरला खाना

- केरल सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण पर ज़ोर देता है। यह पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं और संरक्षण प्रयासों के बारे में जानकारी देता है।
- केरल अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है, और तिरुवनंतपुरम इस विविधता को प्रतिबिंबित करता है। यह हमें शहर में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों के सह-अस्तित्व के बारे में सिखाता है।

आगे मैं किसी और जगह का अपना अनुभव साझा करूंगा.

धन्यवाद।

राजेश कुमार
उप विकास आयुक्त
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# पुणे में तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा हिंदी सम्मेलन कि यात्रा

13 सितंबर 2023 की गुनगुनाती सुबह थी। मैं अजय कुमार मिश्रा और मेरे मित्र श्री हरि किशन मीना जी हिंदी दिवस एवम् तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन जो कि महाराष्ट्र राज्य स्थित पुणे नगर में आयोजित हुआ उसमें भाग लेने हेतु जा रहे थे।

हवाई अड्डे पहुचते ही काफी सारे कर्मचारी जो भिन्न–भिन्न विभागों से थे, उन से मुलाकाते हुई। विमान में 95% उपस्थिति हिंदी दिवस में भाग लेने वाले कर्मचारियों से भरी हुई थी। हम दोपहर बाद पुणे पहुंचे, होटल में सामान रखने के बाद हम शिव छत्रपति शिवाजी  महाराज खेल परिसर, वालेवाड़ी पहुंचे जहां 14–15 सितंबर को दो दिवसीय कार्यक्रम होना था।

14 सितंबर सुबह हम कार्यक्रम स्थल नियत समय 9बजे से पहुंच गए। रास्ते मे मानो ऐसा लग रहा था कि पुरा शहर हिंदीमय वातावरण में रम गया हो। चारों तरफ  उत्साह और असीम आनंद का अनुभव हो रहा था। यहां वहां लोग अपने उत्कृष्ट से उत्कृष्टतम तस्वीरों को अपने कैमरे में कैद कर रहे थे।

केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री अजय मिश्र के नेतृत्व मे उद्घाटन सत्र का शुभांरभ हुआ।  केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने सभा को विडीयो संदेश के माध्यम  से संबोधित किया उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषाओं की विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम हिंदी है। उन्होने कहा भारत वर्षों से ही विभिन्न भाषाओं का देश रहा है। और हिंदी को एक जनतांत्रिक भाषा के रूप में माना जाता है। इसमे अलग–अलग भारतीय भाषाओं और कई वैश्विक भाषाओं को सम्मान देने का भी काम किया है। उन्होने आगे कहा कि हिंदी ने देश की स्वतंत्रता के दौरान देश्वासियों को एकसूत्र मे बांधकर और अनेक भाषाओ के बारे में देश में एकता की भावना को स्थापित करने का काम किया पर उन्होने कहा कि हिंदी की ना तो कभी किसी भाषा से स्पर्द्धा थी और ना रहेगी। हिंदी सभी भाषाओं का शसक्त बनाने का काम करती है।

कार्यक्रम के प्रथम दिन राजभाषा कीर्ति पुरूस्कार वर्ष 2022–23 का वितरण विभिन्न मंत्रालय विभाग/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम/भारत सरकार के बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसायटी आदि को दिया गया।

इस दौरान भारत के नागरिकों के लिए हिंदी में ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभषा गौरव पुरस्कार योजना से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न कार्यालयो/उपक्रमों/बैंको/अर्द्धसैनिक बलों के स्टॉल लगे थे। जो बहुत ही सुंदर ओर दर्शनीय थे। कुछ बैंको ने हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया हुआ था। सही जवाब देने पर इनाम भी दे रहे थे। हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित प्रेरणा तृतीय संस्करण पुस्तक का वितरण वहा हमारे द्वारा किया गाय था।

अर्द्धसैनिक बलों के स्टॉल पर उनके द्वारा किये गए विभिन्न कार्यो को दर्शाया गया था जो कि प्रेरणा से भरा हुआ था। सबसे ज्यादा भीड़ धार्मिक ग्रंथो के स्टॉल पर थी, जहां लोगों ने जमकर खरीदारी की।

सम्मेलन के दौरान तीन लाख 51 हजार शब्दों का शब्द कोष "हिंदी शब्द सिंधु" और ई–ऑफिस कि शुरूआत की गई। सम्मेलन में राज्यसभा के उप सभापति श्री हरिवंश, राजभाषा विभाग की सचिव अंशुलि आर्या और कई जानी मानी हस्तियों ने अलग–अलग विषयों पर संबोधित किया | सत्र के पहले दिन निम्न विषयों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए इनमें निम्नलिखित ने भाग लियाः–

**विषयः राजभाषा @2047: विकसित भारत का भाषायी परिदृश्य (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सहित)**

1. श्री हरिवंश – उप सभापति, राजभाषा
2. श्री भतृहरि महताब – उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति
3. श्री राकेश सिन्हा – संसद सदस्य, राज्य सभा
4. प्रो. गिरीश नाथ झा – अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग

**विषयः हिंदी के विकास में मीडिया की भूमिका**

1. श्री श्याम ज्ञानीराम अग्रवाल–संस्थापक–संपादक, आज का आनंद, पुणे
2. श्री हरीश नवल, वरिष्ठ साहित्यकार
3. श्री हेमंत शर्मा–निदेशक, टीवी–9 भारतवर्ष

विषयः रोजगार के बढ़ते अवसर : हिंदी के परिपेक्ष्य में

1. श्री सत्यार्थ अनिरूद्ध पंकज–आई.पी.एस., उत्तर प्रदेश
2. श्री निशांत जैन–आई.ए.एस., राजस्थान
3. श्री रवि कुमार सिहाग–आई.ए.एस., मध्य प्रदेश
4. सुश्री रूबिका लियाकत–पत्रकार, भारत 24 न्यूज चैनल
   इनमें निम्नलिखित ने भाग लिया।

दूसरा दिनः

**सत्र के दूसरे दिन हम सुबह सुबह पहुंचे। वहां का माहौल बहुत ही खुशनुमा था। लोग भिन्न भिन्न तरीके से तस्वीरें ले रहे थे। वहीं कुछ लोग नाश्ते का आनंद ले रहे थे। हर तरफ लोग खुश थे, मानो ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई उत्सव हो।**

**सत्र के दूसरे दिन निम्न विषयों पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।**

विषयः भारतीय भाषाओं से सशक्त होती हिंदी

1. श्री ह्रदय नारायण दीक्षित – पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश विधानसभा
2. श्री चामू कृष्ण शास्त्री –अध्यक्ष, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान
3. प्रो सुरेश ऋतुपर्ण–वरिष्ठ साहित्यकार
4. श्री दामोदर खड़से – मराठी भाषाविद्

इन कार्यक्रमों में बहुत से प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया जिनमें से कुछ के नाम निम्न है।

विषयः नराकासः राजभाषा कार्यान्वयन का प्रभावशाली मंच

1. श्री आरिफ मोहम्मद खान–माननीय राज्यपाल, केरल
2. श्री अजय कुमार मिश्रा–गृह राज्य मंत्री
3. श्री ए.एस. राजीव–प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बैंक ऑफ महाराष्ट्र
4. अजय कुमार श्रीवास्तव–प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकरी, आई.ओ.बी.
5. सुश्री जहांजेब अख्तर–मुख्य आयकर आयुक्त, अमृतसर
6. डॉ. शुचिस्मिता पलाई–मुख्य आयकर आयुक्त, गाजियाबाद
7. श्री एम. नागराज–निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग), हडको

विषयः सर्वसुलभ, सर्वसमावेशी एवं सर्वव्यापी भाषा–हिंदी

1.श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी–फिल्म निर्माता एवं निर्देशक

2.श्री सुशांत सिन्हा–पत्रकार, टाइम्स नाउ नवभारत

**विषयः भारतीय सिनेमा और हिंदी**

1. श्री आशुतोष राणा– अभिनेता बॉलीवुड
2. श्री आलोक श्रीवास्तव–वरिष्ठ साहित्यकार

शाम 5 बजे समापन सत्र का आयोजन हुआ और सभी लोगो ने समापन सत्र का आनंद लिया। हिंदी के विकास हेतु ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। समापन के बाद हम लोग भी वापस नोएडा के लिए कूच कर गये।

श्री अजय कुमार मिश्र
वरिष्ट लेखा अधिकारी
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

श्री हरि किशन मीणा
सहायक विकास आयुक्त
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री मुन्तियाज, सहायक को प्रशस्ति पत्र देते विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री सुनील गुल्यानी, आशुलिपिक को प्रशस्ति पत्र देते विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री मोहन वीर रूहेला, सहायक को प्रशस्ति पत्र देते श्री अ. विपिन मेनन, विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री जाविर अली, आशुलिपिक को प्रशस्ति पत्र देते श्री अ. विपिन मेनन, विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री विपिन सिसौदिया, वरिष्ठ कार्यकारी को प्रशस्ति पत्र देते संयुक्त विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री कमल अहमद, वरिष्ठ कार्यकारी को प्रशस्ति पत्र देते श्री सुरेन्द्र मलिक संयुक्त विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री भारत भूषण, सहायक को प्रशस्ति पत्र देते श्री सुरेन्द्र मलिक, संयुक्त विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री आकाश शर्मा, वरिष्ठ कार्यकारी को प्रशस्ति पत्र देते श्री अमित कुमार गुप्ता, उपायुक्त (सीमाशुल्क)

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्रीमति करूणा गाबा, वरिष्ठ कार्यकारी को प्रशस्ति पत्र देते श्री अमित कुमार गुप्ता, उपायुक्त (सीमाशुल्क)

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री विपिन सिसौदिया, वरिष्ठ कार्यकारी को प्रशस्ति पत्र देते श्री राजेश कुमार, उप विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री प्रमोद कुमार, सहायक विकास आयुक्त को प्रशस्ति पत्र देते श्री राजेश कुमार, उप विकास आयुक्त

कार्यालय मे 14 से 30 सितम्बर हिंदी पखवाडे के दौरान प्रतियोगिता विजेता श्री प्रकाश चन्द्र उपाध्याय, सहायक विकास आयुक्त को प्रशस्ति पत्र देते श्री राजेश कुमार, उप विकास आयुक्त

# अपनापन

अच्छी थी पगडंडी अपनी,
सड़को पर तो जाम बहुत है,
फुर्र हो गई फुर्सत अब तो,
सबके पास काम बहुत है।।
नहीं जरूरत बुजुर्गों की अब,
हर बच्चा बुद्धिमान बहुत है।।
उजड़ गए सब बाग बगीचे,
दो गमलों में शान बहुत है।।
मट्ठा, दही नहीं खाते हैं,
कहते हैं ज़ुकाम बहुत है।
पीते हैं जब चाय तब कहीं,
कहते हैं आराम बहुत है।
बंद हो गई चिट्ठी, पत्री,
फोनों पर पैगाम बहुत है।।
आदी हैं ए.सी. के इतने,
कहते बाहर तापमान बहुत है।।
झुके–झुके स्कूली बच्चे,
बस्तों में समान बहुत है।।
सुविधाओं का ढेर लगा है,
पर इंसान परेशान बहुत है।।

श्री हरि किशन मीणा,
सहायक विकास आयुक्त
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# बदला मौसम

जिसे अंधेरों ने मिलकर छुपा दिया था कहीं ii
वो इंकलाब का सूरज निकलने वाला है ii
जो लोग बैठे हैं कब्ज़ा जमाए पानी पर ii
उन्हें बताओ कि मौसम बदलने वाला है|

तुम्हारे दर से उठकर अब कहीं जाया नहीं जाता
तेरा होकर के मुझसे हाथ फैलाया नहीं जाता
फकीरी में भी मुझको मागंने में
शर्म आती है
जहां वो है फरिश्तों से
वहां जाया नहीं जाता

रो कर कटे या हंसकर = कटती है जिंदगी ।

तू गंम दे या खुशी दे = सब तेरी मेहरबानी

तेरी खुशी समझकर = सब गंम भुला दिया

सारे जहां के मालिक
तेरा ही आसरा है

अख्तर हुसैन,प्रभारी
सहायक सुरक्षा अधिकारी
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# कोई ना साथ देगा

जाएगा जब यहां से
कोई ना साथ देगा
इस हाथ जो दिया है
उस हाथ जाकर लेगा
कर्मो की है ये खेती
फल आज पा रहा है
किस ओर तेरी मंजिल
किस ओर जा रहा है,,

अख्तर हुसैन,
सहायक सुरक्षा अधिकारी प्रभारी
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# अनोखा दफ्तर

सबका अपना होता है, एक अनोखा दफ्तर
हम सबको रहना होता है, मिल-जूल कर..|
जहाँ सुख-दुःख होता है, बांट लेते हैं मिलजुल कर
वह अनोखा होता है, अपना दफ्तर..||
एक दफ्तर के अंदर रहते है हम सब,
समय पता नही बीत जाता है कब..|
वह है अपना अनोखा दफ्तर ।
जहाँ सब अपना-अपना काम करते है..||
मिल-जुलकर साथ हमेशा रहते है
वह है अपना अनोखा दफ्तर..

स्वर्ग जैसा लगता है जब हम सब मिलकर काम करते हैं|
जहाँ संतोष कुमारी है वहाँ शांति कुमारी भी है, बिना संतोष कुमारी के चारो तरफ अशांति है
इसलिए रखो संतोष कुमारी को हमेशा दफ्तर मे, तो खुशी के बादल छाएंगे
इसी को कहते है अपना अनोखा दफ्तर,

**श्रीमती संतोष कुमारी, सहायक**
**नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र**

## फूल

कितने सुंदर कितने प्यारे ये सतरंगी फूल
सब के मन को सब के दिल को भाते ये सतरंगी फूल...|

अद्भुत छटा बिखेरते ये सतरंगी फूल
इंद्रधनुष के रंगों जैसे होते ये सतरंगी फूल...||

गजरा माला साज सजावट
कितने उपयोग में आते हैं...|

महक मिठास चारों ओर फैलाते
अपना अस्तित्व हमें बताते हैं ...||

ये सतरंगी फूल।

**श्रीमती संतोष कुमारी, सहायक**
**नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र**

# धैर्य और समय

जो मन को नियमित नहीं करते उनके लिए वह शत्रु के समान कार्य करता है।

जीत सदैव अपने विश्वास से निर्मित होती है।

जन्म लेने वाले के लिए मृत्यु उतनी ही निश्चित है जितना कि मृत होने वाले के लिए जन्म लेना।

केवल भाग्यशाली योद्धा ही ऐसा युद्ध लडने का अवसर पाता है जो स्वर्ग के द्वार के समान है।

तरीके विफल हो जाए तो सत्य के लिए हाथ में तलवार उठाना सही है।

सुख-दुख लाभ-हानि, और जय पराजय, को समान करके युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।

ज्ञान से परेशानियों का नाश होता है।

जूनून, डर और लालच के वशीभूत होकर कभी बेहतर दिखाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

युद्ध के लिए तैयार रहना शान्ति बनाये रखने के सबसे प्रभावी साधनों में से एक है।

कब्ज़ा जमाने के बाद दुश्मन को हटाने की तुलना में उसे कब्ज़ा करने से रोकना कही आसान है।

मौत कुछ भी नही है, लेकिन हार कर और लज्जित होकर जीना रोज मरने के बराबर है।

धैर्य और समय दो सबसे शक्तिशाली योद्धा है।

श्री देवेन्द्र मलिक,<br>
पति श्रीमति सोनिका मलिक<br>
अवर श्रेणी लिपिक<br>
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# ″कंठस्थ″ 2.0

## राजभाषा विभाग द्वारा विकसित स्मृति आधारित अनुवाद टूल ″कंठस्थ″2.0

केंन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालयो विभागों राष्ट्रीयकृत बैंको सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों एवम अनुवाद अधिकारियों को एक दूसरे से जोड़ने तथा एक दूसरे के कार्यों से लाभान्वित करने के उद्देश्य से इस टूल को विकसित कराया गया है। ताकि अनूदित कार्य की पुनरावृत्ति कम हो तथा अनुवाद कार्य कम समय में पूरा किया जा सके। राजभाषा विभाग द्वारा अब तक 52 मंत्रालयो एवंम विभागो के साथ साथ राष्ट्रीयकृत बैंको सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के राजभाषा अधिकारियों एवम अनुवाद अधिकारियों को इस टूल का प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

## अनुवाद कार्य ″कंठस्थ 2.0″ के माध्यम सेः–

जब हम अनुवाद कार्य ″कंठस्थ 2.0″ के द्वारा करते है जो अन्तरिम अनूदित दस्तावेज तैयार होता है वह ″कंठस्थ 2.0″ के सर्वर पर EM के रूप मे भी संरक्षित हो जाता है। जिससे इस अनुवाद कार्य से सभी प्रयोगकर्ता लाभान्वित होते है।

मशीन अनुवाद की सभी विधियाः–

जैसे शब्दकोष पर आधारितः–

उदाहरणों पर आधारितः–

नियमों पर आधारितः–

ट्रांसलेशन स्मृति पर आधारितः–

साख्यिकीय मशीन अनुवाद तथा न्यूरल मशीन अनुवाद आदि होते हैः–

"कंठस्थ 2.0" ट्रांसलेशन स्मृति के आधार पर कार्य करता है। किए गए कार्य को **TM** के रूप में संरक्षित करता है। तथा जब भविष्य में अनुवाद हेतु नई फाइल अपलोड की जाती है तो सिस्टम द्वारा **TM** डाटा बेस से वाक्यों के अनुवाद को खोजकर लाया जाता है।

# "कंठस्थ 2.0" में प्रयुक्त होने वाले शब्द जो बार बार प्रयोग किए जाते है

## पहला शब्द है TM

"कंठस्थ 2.0" में डेटा जिस फॉर्मेट में संरक्षित होता है वह है **TM, TM** एक ऐसा डेटा बैंक है जिसमें स्त्रोत भाषा तथा उसके अनुदित रूप को एक साथ रखा जाता है। यह दो प्रकार की होती है

## प्रथम लोकल टी एम (TM)-

जब यूजर किसी भी वाक्य का अनुवाद कर **Commit** करता है तो वह लोकल **TM** कहलाती है तथा यह यूजर के एकांउट पर संरक्षित होती है।

## दूसरी ग्लोबल TM:-

विभिन्न मंत्रालयों विभागो राष्ट्रीयकृत बैंको तथा सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के चयनित राजभाषा अधिकारियों को जिन्हें **Vetter** के रूप में अधिकृत किया गया है, के द्वारा सेंट्रल सर्वर पर जो **TM** अपलोड की जाती है उसे ग्लोबल **TM** कहते है तथा यह सभी यूजर के लिए अप्रत्यक्ष के रूप में उपलब्ध होती है।
पूर्वतः मिलान– जिन वाक्यों को **TM** डाटा बेस से 100% मिलान होता है उसे पूर्णत मिलान या (परफेक्ट मैच) कहते है|

<u>आंशिक मिलान–</u> जिन वाक्यों का मिलान 1% से 99% के मध्य होता है। तो उन्हे आंशिक मिलान या **Fujji** मैच **(Match)** कहते है। और यदि किसी वाक्य का अनुवाद डेटाबेस में नही मिलता तो **No Translation Available** होता है।

**TB** (ट्रम बेस) जब सर्वर द्वारा वाक्यरण का प्रयोग किए बिना केवल शब्दों के आधार पर अर्थ किया जाता है तो उसे **TB** (ट्रम बेस) कहते है।

<u>लक्षित भाषा</u>– जिस भाषा की फाइल का अनुवाद हमें करना होता है। वह लक्षित भाषा या टारगेट **Langauge** कहलाती है इस प्रकार कंठस्थ पर हिन्दी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है।

## <u>कंठस्थ 2.0 के दो संस्करण विकसित किए गए है।</u>

पहला–वेब संस्करण जिसका **URL** है **[www.kanthasth-rajbhasha.gov.in](http://www.kanthasth-rajbhasha.gov.in)**

दूसरा – स्टैंड अलोन संस्करण जिसे राजभाषा विभाग की वेबसाइट तथा कंठस्थ के **URL** से डाउनलोड किया जा सकता है |

कंठस्थ के स्टैंडअलोन संस्करण को कम्प्यूटर में डाउनलोड करने से पूर्व कम्प्यूटर में कम से कम 4 **(GB)** की रेम **(RAM)** माइक्रोसॉफ्ट आफिस 2007 तथा जावा 1.8 **SAVA JDK** आदि उपलब्ध होना चाहिए।

## <u>कंठस्थ 2.0 की कार्यप्रणाली</u>

1. वेब संस्करण का प्रयोग करने के लिए पंजीकरण करना होता है तथा स्टेंडअलोन का प्रयोग करने के लिए डाउनलोड किया जाता है। डाउनलोड करने के बाद उसे सिस्टम पर रन करना होता है। वेब संस्करण में यूजर आईडी तथा पासवर्ड फिल करते है और लॉगिन कर देते है तथा स्टैंड अलोन संस्करण में जो आईकॉन सिस्टम पर बनता है उस पर क्लिक किया जाता है। दोनो ही संस्करण की प्रणाली एक समान है दोनो का होम

पेज एक जैसा खुलता है जिस पर जाकर हमे एक नया प्रोजेक्ट बनाना होता है। इसके बाद नया फोल्डर बनाते है तथा फोल्डर बनाते समय ही उसमें अनुवाद हेतु कम से कम एक फाइल अपलोड कर देते है अब फाइल को एडिटर पेज पर खोलते है तथा वाक्यों का अनुवाद करते है। इसके बाद अनुदित फाइल को डाउनलोड कर लिया जाता है यूजर द्वारा जो कार्य **Commit** किया गया है वह उसकी लोकल **TM** में संरक्षित हो जाती है अब इन सभी **TM** को आप अपने मंत्रालय विभाग, बैंक या उपक्रम के अधिकृत **Vetter** को भेजते है तथा **Vetter** द्वारा इनकी जांच कर ग्लोबल **TM** हेतु सेंट्रल सर्वर पर अपलोड किया जाता है।

## कंठस्थ 2.0 की प्रमुख विशेषताएं

कंठस्थ 2.0 का सेंट्रल सर्वर **NIC** द्वारा मेन्टेन किया जाता है तथा सभी डेटा **NIC** द्वारा सुरक्षित रखा जाता है। इस पर **20 MB** तक फाइल अपलोड कर सकते है। फाइल को विभाजित तथा शेयर करने की सुविधा उपलब्ध है। पूर्ण रूप से मानवीय अनुवाद की उपेक्षा सिस्टम की सहायता से अनुवाद का कार्य कम समय में पूरा किया जा सकता है। स्वंय अपनी लोकल **TM** बना सकते है कार्य को सेव कर सकते है। अनुवाद के समय सर्वप्रथम लोकल **TM** से मिलान की सुविधा उपलब्ध है जिससे हमारी लेखन शैली में एकरूपता बनी रहती है।

**Word** तथा **Excel** की फाइलों को फॉर्मेट रिटेंस की सुविधा उपलब्ध है। सैंट्रल सर्वर पर अधिकृत अधिकारियों द्वारा ही डेटा भेजने की सुविधा उपलब्ध है। किसी विशेष वाक्यांश की सुविधा वह फाइल को खोजने विश्लेषण करने की सुविधा जिसकी सहायता से हम फाइल के अनुवाद में लगने वाले समय का अनुमान भी लगा सकते है और द्विभाषिक फाइल डाउनलोड की जा सकती है। किसी समय विशेष कि रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है। प्रोजेक्ट फोल्डर एवंम फाइल बनाने तथा उन्हें कम्प्यूटर से लेने की सुविधा उपलब्ध है। विभिन्न प्रकार की फाइलों के फॉर्मेटों को अनुवाद हेतु अपलोड किया जा सकता है। केवल यूनिकोड समरर्चित फोन्ट की फाइले अपलोड करने की सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है।

## त्वरित अनुवाद के लिए

**Instant Translation अनुवाद ok करे या पेस्ट करे और ओपन इन एडिटर बटन पर क्लिक करें, हमारे द्वारा जो भी कार्य Commit होगा उसे Show TM के द्वारा देखा जा सकता है।**

**TM Folder के आधार पर सेव होती है। किसी भी फाइल का विश्लेषण करने के लिए Analeses पर क्लिक करे, और फिर Add फाइल पर क्लिक करें, तथा फाइल की स्थिति को देखे किसी समय विशेष में किए गए कार्य का पता करने के लिए रिपोर्ट पर तिथियो का चयन करे और डेटा प्राप्त करे। कठिन शब्दो का अर्थ ढूढ़ने के लिए शब्दकोश की मदद ले सकते है। इस शब्दकोश मे तकनीकी एव वैज्ञानिक शब्दावली आयोग की शब्दावली के शब्दों को भी ऐड (Add) किया गया है।**

## मदद Help

**(Help) हेल्प बटन की सहायता से हमे कंठस्थ 2.0 के यूजर Menual की हाइपर लिंक की PDF फाइल द्विभाषी रूप में उपलब्ध होगी जिसकी सहायता से हम प्रशिक्षण संबधी पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते है।**

अब हम प्रोजक्ट टूल बार पर आते है। जिस पर 2 बटन, एक नया प्रोजेक्ट बनाने के लिए तथा दूसरा सिस्टम पर उपलब्ध प्रोजेक्ट प्राप्त करने के लिए है। नया प्रोजेक्ट, बटन की सहायता से नया प्रोजेक्ट बनाये इसके बाद फोल्डर पेज खुलेगा, जिसमें 3 बटन है पहले बटन की सहायता से नया फोल्डर बनाये तथा उसमें फाइल को अपलोड करे। अब हम इनबॉक्स/फाइल पेज पर है। इस पेज पर कुल बारह बटन दिए गए है। जिनकी सहायता से हम अतिरिक्त फाइल जोडना, TM जोडना, स्त्रोत फाइल डाउनलोड करना, अनूदित फाइल डाउनलोड करना, फाइल को डिलीट करना, आदि कर सकते है। किसी भी फाइल पर डबल क्लिक करने पर एडिटर पेज खुल जायेगा जिस पर कुल 21 बटन दिये गये है जिनकी सहायता से हम अनुवाद कार्य कर सकते है।

कंठस्थ 2.0 में हेल्पयू (MAI) उपलब्ध है और आवाज (Voice) टाइपिंग भी दे दी गयी है तथा इसे मोबाइल द्वारा भी इस्तेमाल किया जा सकता है जो लॉगिन हम अपने कम्प्यूटर पर करेगे वही हम मोबाइल में भी इस्तेमाल कर सकते है।

अभ्यास

कंठस्थ 2.0 का अभ्यास करने से और अपना सम्पूर्ण कार्य कंठस्थ 2.0 में अनुवाद करने से ही कंठस्थ को सीखा जा सकता है। तभी हम अपने कार्यालय का सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में कर सकते है। यदि हम मन मे सोचते रहे कि आज देखगे, कल देखेगे तो कभी भी कंठस्थ 2.0 के अनुवाद टूल को उपयोग नही कर पायेगे।

श्री कमल अहमद
वरिष्ठ कार्यकारी
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र, नौएडा

# बेटे भी पराये होते हैं

उठकर पानी तक ना पीने वाले
अब खुद, अपने कपड़े धो लेते है,
कल तक जो घर के लाडले थे
आज वो अकेले मे रो लेते है,

पिताजी के डाँटने पर मम्मी से
शिकायत करने वाले अब
जमाने के सौ नखरे सह लेते हैं,
सिर्फ बेटियां ही नहीं बेटे भी
पराए होते हैं,..............

खाने में सौ नखरे करने वाले अब
खुद पका के कच्चा पक्का खा लेते हैं,
बहन को छोटी छोटी बातों पर
तंग करने वाले अब, बहन को
याद करके रो लेते हैं,

मम्मी की बाजू पर सर रखकर
सोने वाले अब बगैर बिस्तर के ही
सौ लेते हैं सिर्फ बेटिया ही नहीं
बेटे भी पराए होते हैं,।
.................................

श्री कमल अहमद
वरिष्ठ कार्यकारी, नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# बचपन

अक्सर लोगों से ,यही सुनने को मिलता है|
लाना चाहते है बचपन को वापस ,क्योकि सुख इसी से मिलता है||

जीवन का प्रथम चरण ,जो न वापस आएगा|
ले लिया आनंद जिन्होंने ,बस याद उन्हें रह जायेगा||

अपने भविष्य का आधार यही है ,अब तो सपने पूरे करने हैं|
सिखा दिये गये सही-गलत ,बस उसी रास्तो पर चलने हैं||

है स्तंभ सिद्धांतों के ,जो आज भी रास्ते प्रज्वलित करते है|
था वो बहुत ही मूल्यवान ,तभी तो यही सब कहते है||

कोई चिंता नहीं होती थी ,आधुनिक दुनिया के बारे में|
भविष्य और भूत कि बात ही छोड़ो ,कितने खुश थे जमाने में||

होता हूँ उदास जब भी इसे ,सोच खुशियाँ छा जाती है |
जैसे कल कि बात हुई हो आँखे ओझल हो जाती ,है||

हाँ कुछ गलतियाँ हुई बचपन में ,परन्तु सीख उसी से पाते थे |
बचपन में जो बनी यादें ,उसे सोच मुस्कराते है ||

अशोक शुक्ल,
वरिष्ठ कार्यकारी
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# प्रकृति से हम, हमसे प्रकृति

जैसा कि हम सब जानते हैं कि मानव को आज जो कुछ भी संसाधन प्राप्त हैं, वह सब कुछ प्रकृति की ही देन है| इस प्रकृति से ही हमें हवा, पानी, भोजन ही नहीं बल्कि, विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ भी मिलते हैं| हम सभी इस प्रकृति के कारण ही आज जीवित हैं| सम्पूर्ण अंतरिक्ष में सिर्फ पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है, जहाँ पर जीवन संभव है| क्योकि, पृथ्वी पर आवश्यक पर्यावरण है, जिसके कारण ही यहाँ पर जीवन संभव है|

इस प्रकृति के कारण ही वातावरण का चक्र चलता रहता है| प्रकृति से ही हमें आपने लिए आवश्यकता की सभी प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं| प्रकृति से हमे विभिन्न प्रकार की आयुर्वेदिक जड़ी बूटीया भी प्राप्त होती हैं, जो गंभीर बीमारियों को जड़ से खत्म कर देती हैं| इस प्रकृति ने हमें हर वह चीज दी है, जिसकी हमें आवश्यकता है|

लेकिन हम लोग इसके बदले मे इस प्रकृति को नष्ट करने के पीछे पड़े हुए हैं| आज पूरी दुनिया मे बड़ी मात्रा में  पेड़पौधे को लागातार काटा जा रहा है-| जिससे जंगल के जीव रहे जंतु बेघर हो- हम सभी ने मिलकर इस खूबसूरत प्रकृति का संतुलन बिगाड़ा है| इस लिए प्रकृति धीरेधीरे समाप्त होती जा रही है- जो हवा पहले शुद्ध हुआ करती थी, अब समुंद्री सांस लेने मे भी समस्या हो रही है|

हम लगातार जलवायु परिवर्तन की समस्या से जूझ रहे हैं| आज अचानक कभी भी वर्षा होती है| गर्मी का मौसम अपने समय से बहुत देर से शुरू हो रही है| ऐसे कई इलाके हैं, जहाँ पहले तापमान बहुत कम रहता था, आज वहाँ जलवायु परिवर्तन कि वजह से बहुत ज्यादा गर्मी पड़ रही है| हम सब जानते हैं कि, ओजोन पर्त्, जो सूरज से आने वाली खतरनाक पैराबैंगनी किरणों से इस पृथ्वी को बचाती है, आज वो पर्त् अब धीरे धीरे समाप्त हो रही है।

इस प्रकृति ने हमे बहुत कुछ प्रदान किया है| इसके बदले हमारा फर्ज़ भी बनता है कि, हम इस प्रकृति के भविष्य और अपनी पीढ़ी को भी इसकी प्राकृतिकता को देखने का मौका दें|

इसके लिए हमे 1. अधिक मात्रा मे पेड लगाना **चाहिए, 2. प्लास्टिक** की थैलियों को कम से कम उपयोग करना होगा, 3. हमें निजी वाहनों का उपयोग कम से कम कना चाहिए, और सार्वजनिक वाहनों का उपयोग अधिक से अधिक करना चाहिए। धीरे–धीरे ही सही हमें अपनी प्रकृति का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि अगर यह प्रकृति है तो हमारा वजूद सुरक्षित है।

अंत में मै यही कहना चाहता हूँ की प्रकृति को नष्ट ना करें, इन्हें बचायें, एक पेड़ हर एक वयक्ति लगाये।

जय हिन्द !!

देवांशु यादव
पुत्र श्री भोला प्रसाद यादव, कार्यकारी
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# **बेवजह -- मुस्कुराया करो**

कहे अनकहे कभी कुछ कह जाया करो,
कभी-कभी बेवजह मुस्कुराया करो ।

क्यों करते हो शिकायत उदासी की,
मिलकर दोस्तों से खिल खिलाया करो ।
जिन्दगी बेरंग नहीं इंद्रधनुष है,
इससे ये रंग चुराया करो ।

कहे अनकहे कभी कुछ कह जाया करो,
कभी-कभी बेवजह मुस्कुराया करो ।

क्यों खामोश कर रखा है लबों को,
बोल कर यूं ही मिल जाया करो ।
धन दौलत कम ज्यादा जरूर है,
पर खुश होकर निवाला खाया करो ।

कहे अनकहे कभी कुछ कह जाया करो,
कभी-कभी बेवजह मुस्कुराया करो ।

कोई भूल गया तुम्हें तो क्या,
यूँ ही कभी अपनी याद दिलाया करो ।
यूँ तो हँसने का सिलसिला बुझा सा है,
पर कोशिश कर तुम ही जगमगाया करो ।

कहे अनकहे कभी कुछ कह जाया करो,
कभी-कभी बेवजह मुस्कुराया करो ।

लीना यादव पत्नी श्री विकास यादव
सहायक विकास आयुक्त
मुरादाबाद विशेष आर्थिक क्षेत्र

# गुलाबी चूड़ियां

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बच्ची का पिता तो है!
सामने गियर से ऊपर
हुक से लटका रक्खी हैं
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी
बस की रफ़्तार के मुताबिक़
हिलती रहती हैं...
झुककर मैंने पूछ लिया
खा गया मानो झटका
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला : हाँ साहब
लाख कहता हूँ, नहीं मानती है मुनिया
टाँगे हुए है कई दिनों से
अपनी अमानत
यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने
मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ
किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से?
और ड्राइवर ने एक नज़र मुझे देखा
और मैंने एक नज़र उसे देखा
छलक रहा था दूधिया वात्सल्य बड़ी-बड़ी आँखों में
तरलता हावी थी सीधे-सादे प्रश्न पर
और अब वे निगाहें फिर से हो गईं सड़क की ओर
और मैंने झुककर कहा—
हाँ भाई, मैं भी पिता हूँ
वो तो बस यूँ ही पूछ लिया आपसे
बर्ना ये किसको नहीं भाएँगी?
नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ!

वाशुदेव, कार्यकारी
मुरादाबाद विशेष आर्थिक क्षेत्र

सुरभि शर्मा पुत्री
श्री प्रदीप शर्मा, वरिष्ठ कार्यकारी

कार्यालय में दिनांक 09.08.2023 को "हर घर तिरंगा" एवं "प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ चढ कर भाग लिया।

कार्यालय में दिनांक 15.08.2023 को स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कार्यालय में ध्वजारोहण किया गया एवं राष्ट्रगान गाया गया, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ–चढ कर भाग लिया।

कार्यालय में दिनांक 15.08.2023 को "हर घर तिरंगा" एवं "प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता" के प्रथम विजेता श्री जाविर अली, आशुलिपिक एवं द्वितीय विजेता श्री आकाश शर्मा, वरिष्ठ कार्यकारी को विकास आयुक्त एवं संयुक्त विकास आयुक्त महोदय ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय नौएडा की 45वीं बैठक दिनांक 23.08.2023 को तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय, ओआईडीबी भवन, सेक्टर 73, नौएडा, जी.बी.नगर, उत्तर प्रदेश मे आयोजित की गई | कार्यालय मे कार्यरत श्री सुरेन्द्र मलिक ,सयुंक्त विकास आयुक्त, श्री किरण मोहन मोहाडिकर, उप विकास आयुक्त, श्री हरि किशन मीना ,सहायक विकास आयुक्त, श्री जाविर अली, आशुलिपिक एवं श्री कमल अहमद,वरिष्ट कार्यकारी ने भाग लिया| हिंदी मे अधिक से अधिक कार्य करने एवं हिंदी रिपोर्ट जमा करने से सम्बंधित विकास आयुक्त कार्यालय को प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया | जिसमे कार्यालय मे कार्यरत श्री सुरेन्द्र मलिक ,सयुंक्त विकास आयुक्त, श्री किरण मोहन मोहाडिकर, उप विकास आयुक्त प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए |

हिन्दी पखवाडा के दौरान कार्यालय में 14 सितम्बर 2023 को हिन्दी राजभाषा ज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ चढ कर भाग लिया।

स्वरचित कहानी प्रतियोगिता मे श्री ए.बिपिन मेनन, विकास आयुक्त, परिचय देते हुए

स्वरचित कहानी प्रतियोगिता मे प्रतिभागियों का फोटो, नराकास के सचिव व अन्य

स्वरचित कहानी प्रतियोगिता मे श्री नितिन गुप्ता, उप विकास आयुक्त थैलों का वितरण करते हुए

स्वरचित कहानी प्रतियोगिता मे श्री नितिन गुप्ता, उप विकास आयुक्त नराकास सचिव, को प्रेरणा पुस्तक का चतुर्थ संस्करण एवंम थैला देते हुए

# केदारनाथ धाम

उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में हिमालय की ऊंची पर्वतमालाओं के मध्य में पावन केदारनाथ धाम और बद्रीनाथ धाम स्थित हैं। केदारनाथ धाम भारत के पर्वतीय राज्य उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग -जिला में स्थित है ।

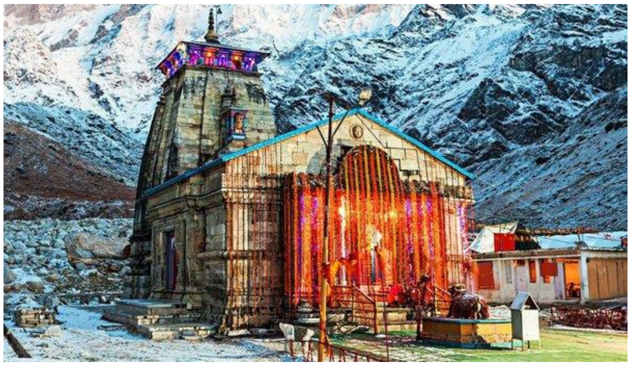

उत्तराखंड के चार धामों में यमुनोत्री, गंगोत्री,बद्रीनाथ, केदारनाथ से एक धाम केदारनाथ है। अपनी यात्रा की शुरुआत आप यमुनोत्री, फिर गंगोत्री फिर केदारनाथ और अंत में बद्रीनाथ से कर सकते हो। केदारनाथ मन्दिर 12 ज्योतिर्लिंग

में सम्मिलित है, और 4 धाम में से एक है। केदारनाथ धाम मन्दाकिनी नदी की किनारे पर स्थित है। यह हिमालय के बर्फ के सफ़ेद चादर की घाटी से ढका

हुआ है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है की इस का निर्माण पांडवो वंश के जनमेजय ने कराया था।

यह शिव का मंदिर है। यंहा स्थित शिव लिंग सब से प्राचीन शिव लिंगो में से एक है। गढ़वाल विकास निगम अनुसार मौजूदा मंदिर 8वीं शताब्दी में आदिशंकराचार्य ने बनवाया था। हर साल लाखों श्रद्धालु यहां दर्शन के लिए आतें हैं। उत्तराखंड में बद्रीनाथ केदारनाथ दो

प्रमुख लोकप्रिय स्थल है जो हिन्दू धार्मिक भावनाओं से जुड़ा हुआ है। केदारनाथ के संबंध में लिखा है कि जो व्यक्ति केदारनाथ के दर्शन किये बिना बद्रीनाथ की यात्रा करता है , उसकी यात्रा सफल नहीं मानी जाती है।

केदारनाथ धाम चार धामों की यात्रा में तीसरा पड़ाव है। गंगोत्री से केदारनाथ की दूरी 330 किलोमीटर है अगर आप सीधा केदारनाथ जाना चाहते हैं तो आप को ऋषिकेश, हरिद्वार या देहरादून से जाना

होगा उस के बाद आप बस या टेक्सी से दिल्ली से केदारनाथ की दूरी लगभग 470 किलोमीटर है, अगर आप सीधा केदारनाथ जाना चाहते है तो उसके लिए आपको ऋषिकेश, हरिद्वार या देहरादून आना पड़ेगा बाद में आगे का सफर बस या टेक्सी से कर सकते है। ऋषिकेश से केदारनाथ धाम की दूरी 226 किलोमीटर, हरिद्वार से 256 किलोमीटर देहरादून से 270 किलोमीटर के लगभग है। केदारनाथ के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन देहरादून, हरिद्वार और ऋषिकेश है तथा हवाई अड्डा जॉली ग्रांट देहरादून में है।

केदारनाथ आने वाले अधिकांश यात्री हरिद्वारऋषिकेश-बस से ही यात्रा करना पसंद करते हैं। बस से सफ़र करना अन्य यातायात साधनों की अपेक्षा थोड़ा सस्ता पड़ता है और आप अपनी केदारनाथ यात्रा के दौरान बीच में पड़ने वाले सुन्दर नजारों का आनंद ले सकते हैं। हरिद्वार से केदारनाथ पहुँचने की लिए आप ये मार्ग का अनुसरण करना होगा जो इस प्रकार हैं

हरिद्वार, ऋषिकेश, ब्यासी, तीनधारा, देवप्रयाग, मलेथा, श्रीनगर, धारीदेवी, रुद्रप्रयाग तिलवाड़ा, अगस्त्यमुनि, चन्द्रपुरीभीरी, फाटा, मपुर, गुप्तकाशी-सोनप्रयाग, गौरीकुंड, केदारनाथ। यदि आप पैदल यात्रा करने में सक्षम नहीं हैं तो आप फाटा या सेरसी से केदारनाथ तक हेलिकॉप्टर टिकट बुक करके भी जा सकते हैं, हालाँकि केदारनाथ हवाई सेवा की ऑनलाइन बुकिंग आपको यात्रा से पहले ही करनी होंगी। बता दें की चार धाम यात्रा 2023 के लिए हेलिकॉप्टर बुकिंग की जिम्मेदारी भारतीय रेल की कंपनी भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) ने ली है, आप ऑफिसियल वेबसाइट पर टिकट बुक कर सकते हैं केदारनाथ धाम जाने का सबसे अच्छा समय सितम्बर-नवम्बर के बीच का होता है, इस समय केदारनाथ में न तो अधिक भीड़ रहती है और मानसून से बाद मौसम एकदम अच्छा हो जाता है।

**अनूप कुमार**

कार्यकारी नौएडा एसईजेड

# आशुलिपिक कौन कहलाता है

आशुलिपिक (स्टेनोग्राफर) वह कर्मी होता है, जो आशुलिपि (शॉर्टहैण्ड) नामक एक अद्वितीय, संक्षिप्त लेखनशैली का उपयोग करके किसी अधिकारी के द्वारा दिए जा रहे संभाषण को कम से कम समय में और उसी गति से लिखने की क्षमता रखता है, जिस गति से संभाषण बोला जा रहा है।

आशुलिपिक पर कार्यालय एवं संस्था के गोपनीय दस्तावेजों को संभालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। आशुलिपिक अपने अधिकारी के प्रति विश्वसनीय होता है। वह एक ईमानदार कर्मी के रूप में अपने पद के दायित्व का निर्वहन करता है। वह कानूनी और चिकित्सीय कार्य वाही का भी प्रतिलेखन करता है। आशुलिपिक के पद पर कार्य करना गौरवपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण है।

एक आशुलिपिक कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है, जैसे–श्रुतिलेख लिखना, प्रतिलेखित करना, कार्यालय दस्तावेजों को संकलित करना एवं फाईलों व अन्य आधिकारिक सामग्रियों का सावधानी पूर्वक रिकॉर्ड रखना, पर्यवेक्षकों के लिए बैठकों की व्यवस्था करना, आधिकारिक दस्तावेजों और मामलों की गोपनीयता बनाए रखना, अधिकारियों को सौंपे जाने वाले दस्तावेजों का उचित क्रम बनाए रखना, दस्तावेजों को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करना और प्रस्तुत करना तथा संदर्भ पुस्तकों नियमों एवं अध्यादेशों को अद्यतन रखना आदि।

आशुलिपिक के द्वारा लिखे गए प्रतिलेखनों में भविष्य की कार्यवाही या आधिकारिक दस्तावेजों को बनाने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण जानकारी होती है। एक आशुलिपिक का यह भी दायित्व होता है कि उससे कोई भी महत्वपूर्ण विवरण प्रतिलेखन करने से छूट ना जाए। विभाग के विभागाध्यक्ष या अधिकारी अलग–अलग गति से और अलग लहजे में श्रुतलेख बोलते हैं, जिसको अबाध गति से लिपिबद्ध करने के लिए आशुलिपिक को कानूनी शब्दावली के व्यापक ज्ञान एवं उत्कृष्ट सुनने के कौशल की भी आवश्यकता होती है।

जैसा कि आप भली भांति जानते है कि अदालती और अन्य व्यावसायिक कार्यवाही आम तौर पर लम्बी अवधि तक चलते हैं, इस पूरी प्रक्रिया के दौरान एक आशुलिपिक धैर्यपूर्वक अपने कत्वयों का पालन करता है। वह महत्वपूर्ण जानकारी को लिपिबद्व करने के लिए पूरे समय एकाग्रता बनाए रखता है। उसे उस भाषा का ज्ञान होता है जिसमें वक्ताओं द्वारा संवाद होता है। उसे उस भाषा की व्याकरण, शब्दावली, वर्तनी और विराम चिन्ह का भी व्यापक ज्ञान होता है। सार्वजनिक क्षेत्र में काम करते हुए उसे अंग्रेजी एवं हिंदी जैसी आधिकारिक भाषा की बुनियादी समझ की भी आवश्यकता होती है। एक अच्छे आशुलिपिक को प्रतिलेखन का उत्कृष्ट ज्ञान और प्रतिलेखन के दौरान अपनाई जाने वाली परम्पराओं की व्यापक रूप से समझ होती है, जिस कारण उसे उन्नत कौशल की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त सभी योग्यताएं, ज्ञान एवं महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने वाला व्यक्ति ही एक ”आशुलिपिक” कहलाता है।

”तूफानों से आँख मिलाओं, सैलाबों पर वार करों,
मल्लाहों का चक्कर छोड़ो, तैर के दरिया पार करो।”

श्री योगेश कुमार अटल
आशुलिपिक
जयपुर विशेष आर्थिक क्षेत्र,
सीतापुरा, जयपुर

# विध्या सर्वश्रेष्ठ धन है

## प्रस्तावनाः–

शिक्षा स्त्री और पुरूषों दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है, क्योंकि स्वस्थ और शिक्षित समाज का निर्माण दोनो द्वारा मिलकर ही किया जाता हैं। यह उज्जवल भविष्य के लिए आवश्यक यंत्र होने के साथ ही देश के विकास और प्रगति में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस तरह, उपयुक्त शिक्षा दोनों के उज्जवल भविष्य का निर्माण करती है। वो केवल शिक्षित नेता ही होते हैं, जो एक राष्ट्र का निर्माण करके, इस सफलता और प्रगति के रास्ते की ओर ले जाते हैं। शिक्षा जहाँ तक संभव होती है उस सीमा तक लोगों को बेहतर और सज्जन बनाने का कार्य करती है।

## आधुनिक शिक्षा प्रणालीः–

अच्छी शिक्षा जीवन में बहुत से उद्श्यों को प्रदान करती है जैसे, व्यक्तिगत उन्नति को बढ़ावा, समाजिक स्तर में बढ़ावा, सामाजिक स्वास्थय में सुधार, आर्थिक प्रगति, राष्ट्र की सफलता, जीवन में लक्ष्यों को निर्धारित करना, हमें सामाजिक मुदों के बारे में जागरूक करना और पर्यावरण समस्याओं को सुलझाने के लिए हल प्रदान करना और अन्य सामाजिक मुद्दे आदि। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रयोग के कारण, आजकल शिक्षा प्रणाली बहुत साधारण और आसान हो गयी है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, अशिक्षा और समानता के मुदे को विभिन्न जाति, धर्म व जनजाति के बीच से पूरी तरह से हटाने में सक्षम है।

## विद्याा सर्वश्रेष्ठ धन हैः–

विद्याा एक ऐसा धन है जिसे ना तो कोई चुरा सकता है और ना ही छीन सकता है। यह एक मात्र ऐसा धन है जो बाँटने पर कम नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत बढ़ता ही जाता है। हमने देखा होगा कि हमारे समाज में जो शिक्षित व्यक्ति होते हैं उनका एक अलग ही मान सम्मान होता है और लोग उन्हें हमारे समाज में इज्जत भी देते हैं। इसलिए हर व्यक्ति चाहता है ि कवह एक साक्षर हो, प्रशिक्षित हो, इसीलिए आज के समय में हमारे जीवन में पढ़ाई का बहुत अधिक महत्व हो गया है। इसीलिए आपको यह याद रखना है कि शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है इसकी वजह से हमें हमारे समाज में सम्मान मिलता है जिससे हम समाज में सिर उठा कर जी सकते हैं।

## निष्कर्षः–

शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को उच्च स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है और समाज में लोगों के बीच सभी भेदभावों को हटाने में मदद करती है। यह हमारा अच्छा अध्ययनकर्ता बनने में मदद करती है और जीवन के हर पहलू को समझने के लिए सूझ–बूझ को विकसित करती है। यह सभी मानव अधिकारों, सामाजिक अधिकारों, देश के प्रति कर्तव्यों और दायित्वों को समझने में भी हमारी सहायता करती है।

"असंख्य कीर्ति–रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह–सी।
सपूत मातृभूमिं के–रूकों न शूर साहसीं।।
अराति सैंन्य सिधु मे, सुवाड़वाग्रि से ज़लो।
प्रवीर हो ज़यी बनो–बढे चलो, बढे चलो।।"

श्री हितेश कुमार
कार्यकारी
जयपुर विशेष आर्थिक क्षेत्र
सीतापुरा, जयपुर

# मेरी दिवाली

## प्रस्तावना

दिवाली प्रकाश का त्योहार है और वर्ष भर लोग इसका इंतजार करते हैं। इस दौरान लोग अपने घरो, कार्यालयों और दुकानों की सफाई किया करते हैं। इसके साथ ही लोग अपने घरों तथा स्थानों को सजाने के लिए नए पर्दे, बिस्तर की चादरें तथा अन्य सजावटी वस्तुओं की खरीदारी करते हैं। दिवाली के दिन को एक बहुत ही पवित्र दिन माना जाता है और कई लोग इसे अपने नए घर में स्थानांतरित होने, व्यापार और सौदा करने तथा शादी की तारीख को तय करने जैसे कुछ नया शुरू करने के लिए सबसे उपयुक्त दिन मानते हैं। दिवाली के इस उत्सव के दौरान कई प्रकार के रिवाज प्रचलित हैं, पटाखे फोड़ना उन्हीं में से एक है। एक ओर जहां अन्य सभी परंपरा और अनुष्ठान इस उत्सव को और भी ज्यादा खूबसूरत बनाते हैं, वही पटाखे फोड़ने जैसे कार्य इसकी साख पर बट्टा लगाने का काम करते हैं। यह रिवाज दिवाली उत्सव का दुखद हिस्सा है क्योंकि यह ना सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है बल्कि कई स्वास्थ्य समस्याओं को भी जन्म देता है।

## पटाखों को 'ना' कहिये

दीपावली पर भारी मात्रा में पटाखों को जलाया जाता है। पहले से प्रदूषित वातावरण पटाखों द्वारा उत्सर्जित धुंए के कारण और भी ज्यादा प्रदूषित हो जाता है। जिससे सांस लेने में भी मुश्किल होने लगती है। पटाखें फोड़ने से कई अन्य स्वास्थ्य समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं जैसे आंखों का लाल होना और त्वचा और फेफड़ों के संक्रमण आदि। इसके अलावा,, इनके द्वारा उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रदूषण का विशेष रूप से नवजात बच्चों, बृद्धों तथा जीव–जन्तुओं पर काफी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

## प्रेम फैलाइये प्रदूषण नही

इस त्यौहार की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि यह हमें एक–दूसरे के पास लाता है। दिवाली के त्यौहार के दौरान लोग एक – दूसरे से मिलते है तथा उपहारों का आदान–प्रदान करते हैं। कई लोग इस दिन का जश्न मनाने के लिए अपने मित्रों और परिवारजनो तथा रिश्तेदारों के साथ जलसों का भी आयोजन करते हैं। यह त्यौहार लक्ष्मी–गणेश जी की पूजा के साथ शुरू होता है। इसके बाद लोग दिया और मोमबत्ती जलाना शुरू करते हैं।

हमें इस त्यौहार का इस्तेमाल अपने प्रियजनो के साथ प्रेम बढ़ाने और उनके साथ अच्छा समय व्यतीत करने के लिए करना चाहिए। अपने दोस्तों और परिवारजनों के साथ खाना, हंसी–मजाक करना और उनके साथ बैठकर बाते करना पटाखे फोड़कर प्रदूषण फैलाने के अपेक्षाकृत कही ज्यादा आनंददायक हो सकता है। हम कह सकते है कि दिवाली प्रेम और खुशी फैलाने का समय होना चाहिए, प्रदूषण फैलाने का नही।

## निष्कर्ष

दिवाली एक बहुत ही खूबसूरत त्योहार है और हमे पटाखों के उपयोग ना कर इसकी खूबसूरती और पवित्रता को ऐसे ही बनाए रखना चाहिए। हम सभी को पर्यावरण की रक्षा के लिए पटाखों को ना कहना चाहिए क्योंकि प्रदूषण मुक्त दिवाली ही मनुष्य और पर्यावरण के लिए सबसे उत्तम उत्सव हो सकता है।

"हिमाद्रि तुंग़ श्रृंग से प्रबुद्ध भारती।
स्वय प्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुक़ारती।।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृड–प्रतिज्ञ सोंच लो।
प्रशस्त पुण्यं पंथ हैं। बढे चलों, बढे चलो"

रचना पत्नी हितेश कुमार
कार्यकारी
जयपुर विशेष आर्थिक क्षेत्र

# "जीवन की सांझ"

अरविन्द जी एक प्राइवेट कंपनी में अच्छे पद पर थे। रिटायर होने वाले थे। रिटायर मेंन्ट के बाद लाइफ़ कैसे बितानी है, हर समय सोचते थे। घर में थी उनकी पत्नी आस्था, जो हर कदम पर सुख–दुख में उनका साथ देती थी। एक बेटी थी प्रियंका, जिसे एम.ए. तक पढ़ाया और एक अच्छा घर देखकर उसकी शादी कर दी थी। और एक बेटा था प्रियांक एम बीए कर चुका था इंजिनियरिंग भी की थी, अभी तक उसे पसंद की जॉब नहीं मिली थी। प्रियांक माँ–पिता का चहेता था। उसने प्रस्ताव रखा कि रिटायरमेंट के बाद पिताजी का जो पीएफ और ग्रेच्युटी का पैसा मिलेगा उससे वो एक स्टार्ट–अप शुरू कर सकता है। अरविन्द जी को भी यह प्रस्ताव ठीक लगा, कि बेटे को बैंक लोन नहीं लेना पड़ेगा और पैसे का उपयोग भी हो जाएगा। पर उन्होंने अपने बेटे प्रियांक के प्रस्ताव पर हाँ या ना कुछ भी नहीं कहा।

रिटायर मेंट से एक माह पहले अपनी बेटी के ससुराल गए। अनके समधी सिद्धांत जी एवंम हंसमुख एवं जिंदा दिल व्यक्ति थे और अरविंद जी से बहुत सहज होकर दोस्त की तरह मिलते थे। वहाँ पहुँच कर पता चला कि उनकी बेटी प्रियंका और उनका दामाद अलग हो गए है। अरविंद जी को हैरानी हुई और सिद्धांत जी से नजर मिलाने पर ग्लानि भी हुई। उन्हें समझ न आया कि वे अपने समधी से क्या बात करें। सिद्धांत जी ने उन्हें बिठाया और कहा कि आप जो सोच रहे है उसे लेकर कृपया मन में कोई ग्लानि न लाए। फिर वे बाते करने लगे। अरविंद जी ने उन्हें बताया कि वे अपने रिटायरमेंट पर मिलने वाला धन अपने बेटे के स्टार्टअप में लगाने की सोच रहे हैं। यह सुनकर सिद्धांत जी गंभीर हो गए। उन्होंने बताया कि उन्होंने भी अपने बच्चों को अच्छी परवरिश और शिक्षा दी बच्चों को अच्छी जाब और घर के लिए उन्होंने अपनी सारी जमा–पूंजी लुटा दी, और अब उनके बच्चे उन्हें अकेला छोड़कर अलग हो गए हैं। सिद्धांत जी ने कहा कि इसमें उन्हें बुरा नही लगता क्योंकि हम सभी इंसान प्रकृति के साफ हुए है और प्रकृति का ही एक नियम है कि हवा सब तरफ है लेकिन यदि किसी बोतल से हवा निकाल दे तो आसपास के वातावरण की हवा उस बोतल को पिचका ही देती है। इस लिए मेरा मत है कि आप अपने भीतर हवा के दाब को निकलने न दें, अर्थात् जो भी धन मिलने वाला है, उसे अपने पास ही रखें तब ही आपके नाते–रिश्तेदार और आस–पास वाले आपको मान देगें। सिद्धांत जी आगे बोले कि मुझे मैंने अपना सारा धन, पूंजी अपने बच्चों पर और रिश्तेदारों पर लुटा दी अब कोई मेरा हाल लेने और बात करने भी नहीं आया। वह तीज–त्यौहारों पर कभी–कभी बच्चों के फोन आते है।

अरविंद जी को बात समझ में आ गई। जब वो वापस अपने घर पहुंचे तो उन्होंने अपना फैसला सुनाया कि रिटायरमेंट के बाद मिलने वाली जमा पूंजी को वे अपने बैंक में ही रखेगे। और उनके हिंसाब से खर्च करेंगे।

साथ ही उन्होंने प्रियाक को सलाह दी कि वो लोन लेकर अपना स्टार्टअप शुरू कर सकता है।

रिटायरमेंट के बाद अरविंद जी ने अपनी सारी जमा पूंजी सही से इन्वेस्ट की, और इत्मीनान की जिंदकी जीने लगे।

लेकिन उनका बेटा प्रियांक उसे काफी मेहनत करनी पड़ती थी उसने नया बिजनेस के लिए अरविंद जी ने उसे समझाया कि संघर्ष तो समुंद्र मंथन की तरह है। संघर्ष के पश्चात जो सफलता मिलती है, वह अमिट होती है। उन्होंने प्रियांक के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा कि मुझे तुम पर पूरा विश्वास है कि तुम बिना किसी सहारे के स्वंय ही सफलता की इमारत रखोगे। वैसे तुम्हें यदि आर्थिक सहायता चाहिए तो मेरे बस में जितना होगा मैं करने के लिए तैयार हूँ। प्रियाक ने सजल नेत्रों से कहा कि आपका आर्शीवाद ही मेरे लिए बहुत है।

अरविंद जी ने रिटायरमेंट के बाद एक पार्ट–टाइम जॉब कर ली थी एक ओल्ड ऐज होम मे। वहां वे ओल्ड एज होम के बैंकिग से संबंधित कामकाज देखते थे और साथ ही ओल्डएज होम में आए लोगों के सुख दुख में शरीक होते थे। धीरे–धीरे उन्हें ओल्डएज होम रास आने लगा। उनका बेटा प्रियाक अपने बिजनेस की वजह से दूसरे शहर शिफ्ट हो गया था। अरविंद जी ने अपनी पत्नी आस्था को ओल्ड–एज होम में रहने के बारे में पूछा तो आस्था ने झिझकते हुए कहा कि हमारा अपना बेटा है, हम क्यों ओल्ड एज होम में जाएगे।

अरविंद जी ने बोला कि नई जरनेशन के बच्चों के पास समय बहुत कम है वे खुद के लिए तो समय निकाल नही पाते हैं हमारे लिए कहां से निकालेगे। फिर हमारे रहने से उन्हें एडजस्ट भी तो करना पड़ेगा।

आस्था अपने पति से सहमत हो गई और फिर कुछ ही दिनों बाद वे दोनों ओल्डएज होम में शिफ्ट हो गए अपने जीवन की सांझ बिताने के लिए।

श्री सुनील गुल्यानी,
आशुलिपिक–2
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

# जिंदगी

जिन्दगी की किताब में, कुछ रंग भरना अभी बाकी है,

यूहीं बढ़ा कदम तू संग मेरे, अभी कुछ पड़ाव बाकी है,

देख, तू न डगमगाना इस डगर पर, अभी तो ठोकरे बाकी है,

लगा के पेबंद पन्नों पर, फिर से चलना अभी बाकी है,

अडिग रहा अगर, होगी नतमस्तक दुनिया, ये जो आज तुझ पर सवार है।

श्री भारत भूषण,
सहायक
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

**हमारे कार्यालय नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र नौएडा में 06.11.2023 को कराई गई स्वरचित कहानी प्रतियोगिता में आए अन्य कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारी जिन्हें हमारे कार्यालय से चयनित विजेताओं को हमारी पांचवी पत्रिका प्रेरणा में जो उन्होंने अपनी स्वरचित कविता प्रतियोगिता के दौरान लिखी थी हमारे कार्यालय की पत्रिका में भी छपवाई गई है। और हमारे कार्यालय द्वारा पुरस्कृत किया गया।**

# <u>आत्म निर्भरता</u>

**.....एक चुनौती और जीते।**

एक समय कि बात है। राधा नाम की लड़की अपने छोटे से परिवार सहित रेवाड़ी नाम के गांव में रहती थी। राधा के पिताजी का देहांत एक सड़क दुर्घटना के कारण हो गाया था एवं वह अपनी माता कलावती तथा दो छोटी बहनों सहित रहती थी। कलावती अपने तीनों बच्चों का पालन पोषण करने हेतु दूसरों के घरो के बर्तन–सफाई करती जिसके बदलें में उसे एक हजार रूपये मासिक वेतन मिलता था। इतने कम रूपयों से घर कि मूलभूत ज़रूरते भी पूरी नही हो पाती थी। राधा से अपनी माँ का दुखी चेहरा देखा नही जाता था एवं बहुत ही कम उम्र में उसने परिवार को प्रगति की राह पर ले जाने की ठान ली थी।

इस बात की समझ कलावती को भी थी कि यदि उसे अपने बच्चों को पिता की कमी नही होने देनी एवं बच्चों को पढ़ा–लिखा कर अच्छा नागरिक बनाना है तो इसका एकमात्र माध्यम शिक्षा हैं। कलावती भले ही अशिक्षित थी परंतु उसने अपने बच्चों को पढ़ाने की ठान ली थी। कलावती खुद भूखी रहकर अपने तीनों बच्चों को भरपेट खाना देती एवं बच्चों की शिक्षा संबधित सभी खर्च वहन करती।

देखते–ही–देखते समय बीतता गया। राधा अब और समझदार हो गई थी। अपनी शिक्षा के साथ–साथ माँ का हाथ बटाने हेतु उसने मात्र तेरह वर्ष" कि आयु में सिलाई बुनाई का काम शुरू कर दिया जिसके बदले में उसे कुछ पैसे मिलने लगे। परिवार सगे–संबधी, सभी ने उनसे मुँह मोड़ लिया था। कोई भी मदद के लिए आगे नही आता था।

राधा का बचपन से बस इतना ही सपना था कि वह अपनी मां एवं अपनी बहनों को अच्छा सुखमयी जीवन दे सकें। एक दिन मैट्रिक की परीक्षा का परिणाम आया, राधा ने उसमें बहुत ही अच्छे अंको के साथ सफलता प्राप्त की। परंतु यह तो अभी शुरूआत थी। सिलाई–बुनाई के काम के साथ स्कूल से वापिस आने के पश्चात् अब राधा ने छोटे बच्चों को ट्यूशन पढाना भी शुरू कर दिया था। उसके बदलें में उसे अच्छे–खासे पैसे मिलने लगे एवं परिवार में आर्थिक निर्भरता आने लगी। ऐसे ही उसने अपनी शिक्षा को पूरा किया। ख़ुद शिक्षित होने के साथ उसने कई सारे बच्चों को भी शिक्षा का ज्ञान दिया अपनी टयूशन कक्षाओं के माध्यम से। राधा अक्सर अपने आस – पडोस, बैंक, टी.वी एवं कार्यालय में सरकारी कर्मचारियों" को देखती थी तथा मन–ही–मन वह यह भी सोचती थी कि एक दिन मैं भी ऐसे ही सरकारी कार्यालय में कार्य करूँगी तथा एक अधिकारी बनूँगी। राधा की इस बात का उसके सगे–संबधी आस–पड़ोस के लोग मज़ाक बनाते थे तथा यह भी कहते थे कि यह भी अपनी माँ कि तरह बर्तन सफाई का काम करेगी लेकिन सरकारी दफ्तर में। यह बात कलावती और राधा को बहुत ठेस पहुँचाती थी परंतु अभी सिर्फ चुप रहने का ही उचित समय था क्योकि उसका मानना था कि जो लोग कभी सहारा न दे सके तो उनकी बात का क्या बुरा मानना। कलावली को अपनी बेटी राधा पर पूरा भरोसा था एवं वह उसका पूर्ण सहयोग करती थी।

अब राधा ने कर्मचारी चयन आयोग एवं अन्य विभागों में आवेदन भरना शुरू कर दिया था एवं पूर्ण तैयारी के साथ वह सभी परीक्षाओं को देकर आती थी। लेकिन सरकारी विभागों द्वारा चयन परीक्षाओं को पास करना इतना आसान नही था। कई सारी परीक्षाओं में फेल होने के बाद भी राधा ने हिम्मत नही हारी थी। जब भी वह हिम्मत हारने को होती तो उसके परिवार की पूर्व परिस्थितियों कि छवी उसके सामने आ जाती थी और वह मन–ही–मन यह सोचती कि यदि मैं अभी मेहनत नही करूंगी तो अपने परिवार को अच्छा भविष्य कैसे दूंगी। इसी सोच के साथ राधा अपनी अगली हर परीक्षा को पूरी मेहनत और ईमानदारी से देती थी।

समय बीतता गया राधा को सफलता प्राप्त नही हो रही थी। उसकी उम्र भी बढती जा रही थी तथा राधा कि माँ कलावती भी अब उसे और सहयोग नही कर पा रही थी एवं उसके विवाह के लिए रिश्ता तलाश रही थी।

राधा अंदर–ही–अंदर टूटती जा रही थी एवं इतने वर्षो से जो अधिकारी बनने का सपना उसने देखा था वह उसे अधूरा ही दिख रहा था। उसके मन मे बहुत सी अलग–अलग व्यथा थी जिसे न तो वह किसी से व्यक्त कर पा रही थी और न ही वह उपने कदम पीछे करने चाह रही थी। राधा अब 27 वर्ष की हो गई थी एवं इस वर्ष उसका लिखित परीक्षा में सम्मिलित होने का आखिरी मौका था। वह दिन–रात जी तोड़ मेहनत करती और नई आशा के साथ परीक्षा में भाग लेने गई। इस बार भी राधा को कुछ उम्मीद नही थी परंतु प्रत्येक रात्रि के बाद सवेरा जरूर होता है उसी प्रकार राधा के जीवन का अंधकार भी दूर हुआ। एक दिन उसकी इमेल पर चयन पत्र आया जिसे देखकर उसे बहुत ख़ुशी हुई। उसे अपनी इतने वर्षो से करी गई मेहनत का फल मिला। चारो ओर खुशी कि लहर दौडने लगी।

राधा ने अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की वह खुद आत्मनिर्भर ही नही बनी बल्कि अपने परिवार को भी आत्मनिर्भर बनाया एवं अपने सपने को साकार किया। यह राधा और कोई नही बल्कि कहानी लिख रही इसी आशुलिपिका की कहानी है।

निष्कर्षः– परिस्थितियां ही हमें नई राह दिखलाती है बस देखने का नज़रिया सही होना चाहिए। सच्ची लग्न, प्रेरणा अपने माता–पिता का चेहरा एवं उनका आर्शीवाद हमें कामयाबी जरूर हासिल करवाता है।
खुद पर रख विश्वास तो हर मुश्किल होगी आसान।

**डिम्पल बालोटिया**
**आशुलिपिक ग्रेड–सी,**
**राष्ट्रीय होटल प्रबंध**
**एवं केटरिंग टेक्नॉलोजी परिषद, नौएडा**

# जिन्दगी–जीने का सलीका

कहने को तो मै बहुत समझदार हूँ पर जब भी परिस्थिति मेरे विपरीत होती है तो मै भगवान से शिकायत करने लग जाती हूँ। कहानी की शुरूआत करने से पूर्व मै आपको अपना परिचय देना चाहूँगी। मै मम्मी की ईशू। दो बेटो के बाद एक बेटी हुई तो मम्मी पापा की खूब लाडली। मेरे मम्मी–पापा ने मुझे बहुत लाड़ – दुलार से पाला। कभी किसी भी चीज की कोई कमी महसूस ना होने दी। मैने राजस्थान के उदयपुर के महाविधालय से पी.एच.डी. की उपाधि हासिल की।

मै राजस्थान के जिस क्षेत्र मे रहती हूँ वहां सरकारी नौकरी लगना बहुत अभिमान की बात हैं। मैने भी पी0एच0डी0 की उपाधि हासिल करने के उपरान्त सरकारी नौकरी की तैयारी करना शुरू कर दिया।

जब हम हमारे माता–पिता को श्रम करके देखते है। तो हमे भी महसूस होता है कि हम उनके सपने पूरी ईमानदारी से पूरे करे और हम दिनो रात सिर्फ सफल होने मे लग जाते है।

मैने भी घर पर सरकारी नौकरी के लिए स्वंय अध्ययन करना शुरू कर दिया। चूंकि मेरी डिग्री इतनी बडी थी कि मैने छोटे पद के एग्जाम (परीक्षा) को तवज्जों नही दी। मै इतने प्रयत्न कर रही थी। परन्तु फिर भी कुछ अंक से हर बार रह जाती।

मेरे मम्मी पापा, बडे भाई हमेशा मेरा उत्साह बढाते। कहते कि तू कर लेगी, टेंशन क्यो लेती है। साल बीता। दो साल बीते। अब मेरे हाथ से मेरा सब्र का दामन मानो छूट रहा हो। मेरे भाई मुझे हमेशा कहते कि कोई भी नौकरी मिलना यह प्रमाणित नही करता कि तू होशियार है। हम जानते है तुझे, तू कितना मेहनत करती हैं बस तू हताश मत हुआ कर तू तो हमारी प्यारी गुडिया है। वो हमेशा मेरा हौसला बढाते रहते।

तीन साल बीते। अब मैने हर पद चाहे छोटा हो या बडा परीक्षा देना शुरू कर दिया। जल्द ही वो दिन आया मुझे विधुत विभाग मे सहायक के पद पर नौकरी मिल गई। पद से कही ज्यादा मुझे सरकारी नौकरी लगने की खुशी थी। परन्तु वो खुशी भी कुछ ही पलो की थी। जैसे–समय बीता वहाँ के कार्मिक मुझसे कहते कि क्या ही मतलब हुआ पी0एच0डी0 की उपाधि लेने का, जब कार्य तुम्हे बारहवी पास लोगो के साथ ही करना है। मै खूब हताश हुई। एक दिन एक नया कार्मिक हमारे कार्यालय मे बैठा था। वो हमारे निदेशक के आने का इंतजार कर रहा था। जैसे ही निदेशक आए वो उनके कमरे मे चला गया। उसकी आँखो मे एक अलग ही चमक थी और चेहरे से काफी हँसमुख सा दिख रहा था। कुछ ही देर मे निदेशक ने हमे अपने कमरे मे बुलाया। उन्होने बताया इनका नाम सुनील है और इन्होने "सूचना सहायक" के पद पर हमारे कार्यालय मे ज्वाइन किया। वह गूँगे एवं बहरे है। निदेशक के यह शब्द सुन कर मानो एक भारी झटका लगा। इतना सुन्दर नौजवान हँसमुख इंसान इस बीमारी से ग्रसित है। पर उस कार्मिक (सुनील) के माथे पर एक सिकंन की रेखा तक नही थी। उसने सभी को मुस्कुराकर "हाय" कहा (इशाया किया)।

वह मेरी ही सीट के नजदीक बैठ गया। वह मुझसे इशारों मे बात करने लगा। शुरूआत मे तो मुझे कुछ समझ नही आ रहा था पर जैसे–जैसे समय बीता उनकी सारी भाषा समझ आने लगी। अब हम इशारो मे ही खूब बाते करने लगे।

एक दिन मध्याहन भोजन मे मैने उनसे उनके परिवार के बारे मे पूछा। उन्होने बताया कि उनकी यह स्थिति एक दुर्घटना के बाद हुई। वह जन्म से गूंगे बहरे नही थे। जब वह बहुत छोटे थे तो उनका एक्सीडेंट हुआ। उनका सिर ट्रक के टायर से दब गया । माता पिता कभी अपने बच्चे का बुरा नही चाहते वह किसी भी हालत मे उसको खोना नही चाहते। वह बच तो गए परन्तु उन्होने उस दुर्घटना के बाद अपनी सुनने और बोलने की क्षमता को खो दिया। उनकी पत्नी जन्म से ही गूँगी एवं बहरी हैं चूकि आज भी हमारे समाज मे रूढिवादी सोच है जिन्होने समाज को बँधनो में जकड रखा है। उनकी एक बेटी है वह भी गूँगी एवं बहरी हैं क्योकि उसे यह अपनी माता से आनुवांशिक प्राप्त हुआ है। उनके घर में

जल्द ही एक नया सदस्य आने वाला है। वह बहुत खुश थे। समय बीता। जल्द ही उनके घर एक ओर लक्ष्मी का आगमन हुआ। इतनी मखमल जैसी कोमल एक दम ओस की बूंद जैसी लडकी। उस बच्ची को देखकर ही उसने मेरा मन मोह लिया। जैसे बच्ची बडी हुई वह भी कुछ नही बोली उसे। डॉक्टर को दिखाया । डॉक्टर ने जांच की।

जब जाँच की रिपोर्ट आने वाली थी वो इतने उदास थे। उनकी रूह अंदर से सहमी हुई थी। वह बस चाहते थे कि कुछ भी हो वो इस बीमारी से ग्रसित ना हो। बच्ची की रिपोर्ट देखकर मेरे पैरो तले मानो जमीन खिसक गई। उस दिन मै पहली बार इतना फूट–फूटकर रोई। इतना तो मै परीक्षा मे फेल होने पर भी नही रोयी थी। उस बच्ची को भी आनुवांशिकी यह बीमारी मिली। सुनिल सर ने कभी भी उन बच्चियो को बोझ नही समझा। उन्होने दोनो बच्चियों को कुश्ती सिखाने भेजा। वह उनको जिन्दगी को जीना सिखाना चाहते थे।

उस दिन मुझे अपनी सोच बहुत तुच्छ लगी। हम हमेशा भगवान से शिकायत करते है कि आपने मुझे यह नही दिया वो नही दिया। अच्छे पद पर नौकरी नही दी। पर हम कभी भगवान के शुक्रगुजार नही होते जिन चीजो से उन्होने हमे नवाजा है। मै हमेशा भगवान से शिकायत करती थी कि मै इतना जल्दी बीमार क्यों हो जाती हूँ। कोई नही होता, सिर्फ मेरे साथ ही होता है। पर उस परिवार के सामने मेरा दुख तो कुछ नही था। फिर भी वो लोग कितनी खुशी से रह रहे।

समय बीता । उनकी बडी बेटी 12 वर्ष कि हो गई। उसे कुश्ती में गोल्ड मेडल मिला। यह सुनकर मेरी तो खुशी का ठिकाना ही नही रहा। सुनिल सर की एक बात आज भी मेरे जहन मे है–

जिन्दगी बहुत हंसीन है, उससे प्यार कर,
अभी रात है तो सुबह का इंतजार कर।
वो पल भी आएगा, जब सारी ख्वाहिश पूरी होगी,
रब पर रखो भरोसा और वक्त पर एतवार करा।।

प्रेरणा– दिव्यांगता अभिशाप नही है यह समाज मे कुछ कर दिखाने का जज्बा हैं। जिन्दगी को कोसने की बजाय, जीने का सलीका आना चाहिए। दूसरो की जिन्दगी से तुलना करने के बजाय, भगवान ने हमे जिस चीज से नवाजा है उसके लिए शुक्रगुजार होना चाहिए। जिन्दगी वाकई बहुत खूबसूरत है बस जीने का सलीका आना चाहिए।

**नाम अंकिता जैन**
**तकनीकी अधिकारी**
**वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय,**
**नौएडा**

# "कोरोना का कहर"

# एक लहर

माँ, एक छोटा सा शब्द और उसका अपने परिवार में रोजमर्रा की जिंदगी जीने के लिए, एक मजबूत किरदार जो कि करनी पे आश्रित नहीं होना चाहती। अपने निजी जीवन के अतिरिक्त परिवार में जुड़े सभी लोगों का हर तरह से सहयोग करने के अलावा परिवार की सभी जरूरतों का खास ध्यान रखती है।

मैं भी माँ हूँ, प्यारे से दो बेटे और उनके पिता जो कि स्वभाव से थोड़े से सख्त हैं। पिता जो कि परिवार का अपने नजरिये से ध्यान रखते हैं।

नौकरी पेशा होने के नाते मेरा जीवन रोजमर्रा में काफी भागदोड़ वाला रहा। पता ही नहीं चला कब बच्चे बडे हो गए पढ़ लिख कर स्वावलम्बी हो गए। रोज दिन एक जैसा ही चलता था सुबह काम निपटा के कार्यालय और शाम को सीधे घर की और सबके खाने पीने की व्यवस्था करके ही जाती थी।

कार्यालय में करोना के बारे में थोड़ा थोड़ा सुनाई देने लगा था। बचके रहती थी वैसे भी सीट के अलावा इधर उधर जाना पंसद नही था। फिर एक दिन धमाका हुआ कार्यालय में कुछ लोगो को कोरोना की शिकायत हो गई और कार्यालय में घर से काम करने का आदेश आ गया, घर पर बैठ गए और वही से काम की शुरूआत की। कुछ दिन बीते और फिर एक दिन लगा की छाती में बलगम व जकड़न होने लगी है। डॉक्टर से दवाई ली और खानी शुरू की । कोरोना का टेस्ट (–) आया था और मैं निश्चित हो गई। सीधे सीधे यह हुआ कि 5 दिन की दवाई के बाद भी तबियत नही सुधरी और एक दिन बलगम के साथ खून दिखाई दिया और मैं सुन्न हो गई। घर का काम चल ही रहा था चुपचाप पलंग पर लेट गई और छत पर घूमने लगी आशंका होने लगी कही ये वो तो नही, डर गई थी लेकिन किसी को बताया नही। इतने में बड़ा बेटा आया ओर मेरा नाम लेकर बोला
"क्या बात है बबीता चुप क्यों है।
क्या हुआ सब ठीक"

कुछ न बोलते हुए धीरे से बताया की थूक में खून आया है। यह सुनते ही जैसे उसे करंट लगा भागा गया बाहर और छोटे भाई और पिता को बुला लाया। परिवार की बैठक हुई कोरोना (–) था परन्तु। खैर डॉक्टर ने कहा एमआरआई करा लो, पहली बार एमआरआई के दर्शन हुए और फेफड़ो में बड़े बड़े गोल धब्बे आए सिर्फ 25% बचे थे एमआरआई करने वाले कर्मचारी को रिपोर्ट दिखाई तो वह लड़ने लगा, इतनी देर से लाए हो इनको पता नहीं लगा तुम क्या ध्यान रखते हो अच्छे से हॉस्पिटल की व्यवस्था करो मैं तो चुपचाप सोफे पे बैठी थी सोच रही थी शायद ऐसे ही अंत होगा। अपने आप को बहुत चुस्त दुरूस्त समझती थी।

हम घर आ गए तेजी से हॉस्पिटल की तलाश होने लगी पता चला बहुत ही बड़ी लहर है कोरोना कि कही भी व्यवस्था नही हो पा रही थी। बच्चों की हालत पिता के चहरे पे चिंता साफ नजर आ रही थी।

खैर एक कैंप जो कि जन–संघ की शाखा चलाने वाले कुछ लोगों ने मिलकर व्यवस्था की थी जिसका पता मेरे छोटे बेटे ने लगाया। उस कैंप मे उसके दोस्त रहते थे यह भी था कि कुछ अचानक जरूरत होगी तो पूरी हो जाएगी।

मैं चुपचाप धुले हुए कपड़े तह करके रख रही थी कि बड़ा बेटा बदहवास सा आया और बोला छोड़ो सब तुम्हें जाना है। मैंने कहा काम तो पूरा कर लूं अभी तो दोपहर के फुल्के भी बनाने है तू बैठ जा कल चलेगे इतना सुनते ही उसने कपड़े उठा के फेंके और बोला सुना नहीं आपने, छोटा बेटा रूआंसा सा हो रहा था उनके पिता भी चुपचाप से थे। दिल था सबसे जोर के गले मिलू लेकिन बिमारी ने रोक रखा था। मेरा हाथ खींच कर बड़ा बेटा बाहर की ओर ले जाने लगा तो मैं चिल्लाई अरे पैसे तो लेने दे मेरा पर्स, मेरा सामान कुछ भी नही बांधा कहती ही रह गई और वो खींच कर गाड़ी में ले आया। जाते जाते घर को पीछे मुड़ के देखा, मेरे कपड़े, चप्पल, जूते, मैने पहने मेरा श्रृंगार का सामान जैसे सब मुझे सतब्ध होकर देख रहे थे। वो समय का मंजर शब्दों में बयां करने के लायक नहीं था। चाहती थी बच्चों के पिता कुछ बोले दिवार पे हाथ घसीटती रह गई ओर सब छूट गया ऐसा लगा मेरी डोली एक बार फिर उठ रही है।

वहां पहुंचते ही मुझे ऑक्सीजन लगा दी गई बिलकुल, सन्नाटा और मशीनों की आवाज डरे हुए चेहरे न कोई अपना सिर्फ दो कपड़े जो पहने थे उसके साथ पैर में रबड़ की चप्पल, अपनी स्थिति मे हैरान थी। पर्स जिसे मैने कभी अपने से अलग नही किया वह भी उठा ना पाई और दवाई से कब सो गई पता ही नहीं चला।

सुबह हलचल से नींद खुली तो देखा आस पास डॉक्टर और नर्सों की भीड़ मैंने डॉक्टर से पूछा, सर मेरा बेटा आया क्या वह बोले यहा कोई नही आ सकता सुनकर सब शून्य हो गया और बिस्तर पर लेट गई।

सोच रही थी घर से क्यों आई घर का क्या होगा कपड़े कौन धोएगा खाना बच्चे कैसे खांऐगे लगा जैसे सब खत्म हो गया। चुप सी हो गई थी बड़ी बात यह थी कि किसे कहें कोई मिलने वाला था नही। हर पल सोच रही थी सिर्फ घर घर और घर

इलाज शुरू हो गया काफी तबियत खराब थी डॉक्टर से फोन लेकर घर में सूचना दी कि मेरे कपड़े ओर मोबाइल ओर कुछ जरूरी चीजे। सब आ गये बच्चे आधी रात को फोन करते तो ना बोल कर सिर्फ हूं हां करती कि जिंदा हूं।

आखों के सामने कई लोग देह त्याग चुके थे प्लास्टिक की शीट में जाते देख शरीर में सिहरन होनी थी कि अंत समय में किसी साथ भी नसीब नहीं होगा क्या। बहुत ही कठिन पल और ऐसा समय जिसकी कल्पना भी नहीं की थी। रात के दो बजे हमेशा नींद खुलती थी व्हील चेयर पर आ गई थी। नर्सो द्वार शौचालय ले जाया जाता था।

फिर एक दिन रात को जब लघुशंका हुई तो नर्स बाहर लेकर गई। हमारे कमरे के साथ ही जामुन का पेड़ था
उस पर एक विशाल मोर बैठा था। पहले तो डर गई फिर जल्दी से हाथ जोड़ प्रणाम किया ऐसा लगा कोई ईश्वर के रूप में मिलने आया है अर्न्तमन से आवाज आई हे देव अगर लेने आए हो तो मुझे थोड़ा समय और दे दो ताकि मै अपने बच्चों का विवाह कर सकू और अगर नही ले आर्शीवाद
तो दे दो ओर हाथ जोडकर आंखे बंद कर ली लगा मृत्यु आ ही गई है। मोटे से आँसुओं की धार आँखों से बह निकली और

ये वह पल था जो मैं बयां नही कर सकती जिसमें एक माँ का दर्द और जिम्मेदारी का अहसास था पिता का कोई नामो निशान न था। लेकिन समय टल गया और मैं ठीक होकर आ गई घर क्या देखा मैंने घर बहुत ही साफ सुथरा ओर मेरे लिए मेरे पति ने हर व्यवस्था करके रखी थी। जिनकों मैं सख्त दिल समझती थी आज उनका यह व्यवहार पहली बार देखा और हलके सी हम चारों ने मिलकर एक दूसरे को कस के पकड़ लिया। यह पल वह था जो सबसे अलग था एक परिवार का अहसास प्यार और जिम्मेदारी का पल बच्चों के पिता के लिए लिखा।

डरती थी सब बिखर जाएगा टूट जाएगा पर एक विश्वास था कि तुम संभाल ही लोगे, बिखरने न दोगे। मैं घर तो तुम संतभ थे मैं चेहरा तो मुस्कान हो तुम नयनों में काजल की धार और श्रृंगार हो तुम बालों में गुंथा गजरा हो तुम जीवन का एक अहसास हो तुम एक विश्वास था बिखरने न दोगे संभाल ही लोगे।
यह कविता काफी बढी है समय की कमी के चलते लिख न पायी।
अनंतः यह कहना चाहती हूँ कोरोना की लहर का कहर तो था लेकिन उसने हमें एक मजबूत और न टूटने वाला रिश्ता दिया।

श्रीमति बबीता राजपूत,
निजी सहायक,
नवोदय विधालय समिति

# “पक्की सहेलीः माँ”

स्नेहा घर का सामान पैक कर रही थी और माँ उसे देख रही थी। “तुम्हें लगता है तुम यह ठीक कर रही हों?” माँ ने स्नेहा से पूछा। “हाँ माँ।।” और स्नेहा अगले सवाल का इंतजार करने लगी।
“तुम्हें इससे खुशी मिलेगी?”
हा” माँ! हम खुश रहेंगे।”
“तुम्हें डर नही लगता स्नेहा? लोग क्या कहेंगे?” माँ ने परेशान स्वर मे पूछा।
स्नेहा ने माँ की तरफ देखा, लम्बी साँस भरी और वापस से सामान पैक करने लगी। माँ कुछ–कुछ बोलती रहीं पर स्नेहा को तो जैसे उनकी बातों से कोई मतलब ही नहीं हो। पर जब माँ ने फिर कहा–

“लोग समाज, रिश्ते सब देखना पड़ता है। लोग क्या कहेंगे यह सोचना पड़ता है।”

इतना सुन कर स्नेहा माँ के बगल में आकर बैठी और उनका हाथ पकड़ कर सहजता से बोली– “शायद। यही दिक्कत है। हम कब तक लोगों के डर से सही गलत का फैसला करेंगे माँ।”
माँ चुप–चाप स्नेह की बाते सुन रही थी। बाबा के गुज़र जाने के बाद तुमने नौकरी की तब क्यों नहीं सोचा कि लोग क्या कहेंगे। तुमने मुझे अकेले पाला तब यह लोग कहाँ थें?”

माँ बोलने ही वाली थी कि स्नेहा फिर बोल पड़ी–
“बचपन से सुनती आई हूँ, लोग क्या कहेंगे?
नहाया नही तो लोग गंदा कहेंगे।
नंबर कम आए तो लोग कुछ कहेंगे।”

माँ की आँखों में ममता थी, स्नेहा को देखते हुए बोली– “वो तो मै तुमको समझाने और मनाने के लिए कहती थी।” इसमें तो कोई बुराई नहीं बताओं?”

माँ के सवाल पर स्नेहा फिर सवाल कर बैठी जब मेरा भला करना होता है तब तुम क्यों नहीं सोचती लोग क्या कहेंगे।”

“जब मै पढ़ाई करने तुमको छोड़ कर हॉस्टल गई तब तुमने नहीं सोचा और जब मैने हेमंत से प्रेम विवाह किया तब भी तुमने नहीं सोचा लोग क्या कहेंगे?”

माँ ने स्नेहा के मॉथे पर हाथ फेरते हुए कहा– “पढ़ाई मे तुम्हारी भलाई थी और हेमंत मे तुम्हारी खुशी। तुम्हारी खुशी ही तो मेरा जीवन है स्नेहा।” वही तो मैं भी कह रही हूँ मॉं, तुम्हारी खुशी भी तो मेरा जीवन है अब तुम ही तो मेरी पक्की सहेली हो।”

पर बेटा शादी के बाद माँ का बेटी के साथ उसके ससुराल में रहना ठीक नहीं।” माँ ने स्नेहा को समझाने की कोशिश की।

“क्यों माँ?” स्नेहा ने माँ से पूछा।
माँ ने परेशान स्वर में कहा–
“दामाद जी क्या सोचेंगे और उनके माता–पिता को अच्छा नही लगेगा।”

स्नेहा और माँ बात कर ही रहें थे कि बाहर दरवाजें पर गाड़ी रूकने की आवाज़ आई। हेमंत ने बाहर से ही आवाज़ लगाई “फटा–फट गांडी में सामान रखो”।
दरवाजे की तरफ देखते हुए स्नेहा बोली–“लो अब उनसे ही पूछ लेना।”

माँ के पीछे, दरवाजे से अंदर आते हुए हेमंत ने कहा–" माँ सामान सब तैयार है? तो कहाँ रहने चलोगी अपने बेटे के घर या फिर पक्की सहेली के" ।

माँ सब सुनकर शांत अपनी जगह पकड़ कर बैठ गई। स्नेहा और हेमंत को खुश देखकर वो कुछ ना बोल पाई बस खुद को मनाने लगी अपनी पक्की सहेली स्नेहा के घर उसके साथ परिवार के साथ रहने के लिए।

श्री सरोज वर्मा
सहायक–1
कार्यालय–राष्ट्रिय जैविक संस्थान, नौएडा

# कर्ज अदायगी

शीर्षकः– सोनू जब स्कूल से घर आया तो उसने दादी–दादी कहकर आवाज लगायी पर दादी की आवाज सुनाई न दी और न ही वह दिखाई दी,

सोनू जब भी स्कूल से घर आता तब दादी उसे गले से लगाती, उसके मोजे व जूते उतारती उसे बहुत लाड करती और हाथ मुँह धोने के लिए कहती और उसके बाद दोनो साथ मे खाना खाते परंतु आज ऐसा न हुआ। सोनू का मन बहुत विचलित हो गया क्योंकि दादी उसे पूरे घर में कही भी दिखायी नही दी।

उसने माँ से पूछा तो माँ ने बताया कि वह अपने किसी रिश्तेदार के घर गयी है। सोनू ने अचंभे से कहा रिश्तेदार ? पर उनका कौन सा रिश्तेदार आ गया दादी ने तो कभी किसी रिश्तेदार के बारे मे नहीं बताया और वो मुझसे कह कर क्यों नही गयी।

सोनू का मन बहुत सारे प्रश्नो से घिर गया था और यह सभी सवाल उसे परेशान कर रहे थे। सोनू ने माँ से कहा कि मुझे उनका फोन नंबर दो मैं अभी उनसे बात करता हूँ। हे भगवान मै भी कितनी पागल हूँ उनसे नंबर लेना ही भूल गई। माँ ने सोनू से कहा। तुम अभी खाना खा लो शाम को जब पापा आएंगे तब बात कर लेना दादी से। सोनू ने बस दो निवाले खाना खाया और उससे ज्यादा खाया ही नही गया।

सोनू ने पापा को फोन मिलाया और दादी का नंबर माँगा पर पापा ने कहा कि वह अभी व्यस्त है और शाम को बात करवा देंगे।

पापा ने दादी को दफ्तर से ही फोन कर दिया कि सोनू से बात करने पर उसे वह ये ही बोले कि वो अपने किसी रिश्तेदार के यहाँ गयी है। शाम को दादी से बात करके सोनू को कुछ तसल्ली हुई।

रविवार का दिन आया और सोनू ने माँ पापा से दादी से मिलने चलने को कहाँ पर पापा ने कहाँ कि वो कुछ दिन के लिए अपने रिश्तेदार के यहाँ गयी है उन्हे रहने दो पर सोनू हठ करने लगा और बोला कि हम उन्हे लेकर नही आ रहे केवल मिलके वापिस आ जाएंगे और सोनू की जिद के आगे पापा को झुकना पड़ा और वह सोनू को दादी से मिलवाने चल पड़े जब वह वहाँ पहुँचे तब एक बड़े हॉल में इंतजार करने लगे, कुछ देर मे दादी वहाँ आयी और दादी को देख कर सोनू उनसे लिपट गया और रोने लगा। वह दादी से बोला कि आप मुझे बिना बताये क्यों चली आयी और आपके कौन से रिश्तेदार है आपने तो कभी नही बताया। दादी अंदर से किसी को बुला कर लायी और बोली यह मेरे भैया भाभी है सोनू ने उनको प्रणाम किया और दादी से बोला कि मैं भी आपके साथ यही रहूँगा पर दादी ने उस समझाया कि वह वापिस जाये वहाँ उसका स्कूल है पढ़ाई है। सोनू दादी से जल्दी वापस आने का वादा लेकर लौट गया और परेशान दादी अपना मन मार कर रह गयी।

घर वापस आने पर सोनू उदास रहने लगा क्योंकि वह दादी के कमरे में ही उनके साथ सोता था दादी उसे कहानी सुनाया करती थी। कुछ दिन बाद सोनू ने बिना दादी के रहना सीख लिया और जब मन होता था तो वह फोन पर बात कर लेता था।

एक दिन सोनू के स्कूल में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वृद्धाश्रम जाकर सामान बांटने का कार्यक्रम बना और सोनू ने भी उस कार्यक्रम में भाग लेने का मन बनाया। सभी बच्चे निर्धारित दिन बस में बैठ के आश्रम चल दिए और बस आश्रम के सामने जाके रूक गयी। सोनू ने देखा कि यह तो दादी के रिश्तेदारो का घर हैं उसे लगा कि जरूर ड्राइवर से कुछ भूल हुई है भला यह कैसे वृद्धाश्रम हो सकता है हैरान सोनू सभी बच्चों के साथ बस से उतरा और आश्रम मे घुसा और देखा कि सभी बुजुर्ग लाइन मे खड़े हुए है और बच्चे बुजुर्ग को सामान बाँटने लग गये। उस लाइन मे सोनू ने दादी को देखा और उनके पास गया। दादी ने सोनू को समझाने की बहुत कोशिश की पर अब तक तो सोनू सब कुछ

समझ चुका था। सोनू ने कहाँ कि माँ पापा ऐसा कैसे कर सकते है माँ बाप का ऋण तो जीवन भर नही चुकाया जा सकता और मेरे पापा ने दादी को यहाँ भेजकर पाप किया है। जिन दादी ने अपनी पूरी जिंदगी पापा के पालन पोषण और प्यार मे लुटा दी अन्होने ही आज दादी का त्याग कर दिया। पापा इतने स्वार्थी कैसे हो सकते है जीवन के इस चरण मे जब दादी को सबसे ज्यादा जरूरत पापा की है तो पापा ने ही दादी को यहाँ भेज दिया।

सोनू ने कहाँ कि माँ पापा को इस पाप से मुक्ति कैसे मिलेगी। अरे मुक्ति तो छोड़ो उन्हे तो इस जघंन्य अपराध की सजा मिलनी चाहिए।

जिन माँ पापा ने दादी को घर से निकाल दिया उन्हे संतान सुख का भी अधिकार नहीं है।

जैसे पापा ने दादी का त्याग किया है मैं भी माँ पापा का त्याग करता हूँ और सोनू ने हमेशा के लिये घर छोड़ने और दादी के साथ रहने का निर्णय किया।

श्री अमित कुमार अग्रवाल
कार्यालय तेल उद्योग सुरक्षा निदेशालय

# ”मनोरमा”

प्रस्तुत कहानी ”मनोरमा” उस स्त्री समाज का प्रतिपाद्यरा है जिसमें प्रतिबिंबित होती है प्रत्येक स्त्री के अनछुए अकथ्य मनोभाव जिसे वह साझा करती है अपनी लेखनी ”दैनंदिनी” द्वारा। यह एक नयी कहानी के रूप मे अपनी गति से एक ही चरित्र–चित्रण, कथानक, संवाद को संजोए बढ़ती चली जा रही है तो आइए सुनते है एक कहानी जिसका शीर्षक हैः **”मनोरमा”**

गुलाबी–गुलाबी ठंड में अरूणोदय की लालिमा में मंद–मंद मंदाकिनी व हरश्रंगृार के फूलों की बयार में बहती चली जा रही थी ”मनोरमा”।

जीवन की इस हड़–बड़ी में इस आपा–धापी मे नित कर्तव्यों का निर्वहन करती हुई दौड़ती भागती संभलती बढ़ी चली जा रही थी ”मनोरमा”–एक शुद्ध अर्न्तमन मे पल्लवित–पोषित करती ”सर्वे भवन्तु सुखिनः” के भाव से।
”मनोरमा” हतप्रभ थी स्वंय भी कि इतने मुखौटे पहने बढ़ते चली जा रही थी जीवन की उस ”धुरी” पर ”अन्यमनस्क” सी ”मनोरमा”।

कभी हँसती–ठिठलाती, कभी शांत–निर्विवाद, निर्विध्न, अबाध्य, सौम्य शांत भाव से अविरल धारा की तरह प्रवाहमयी, दिव्य पुंज को प्रज्जवलित करती......
क्रोधाग्नी में धधकती’... उद्दीप्त शिखा की लौ–सी बढ़ती अपनी ही कश्मकश में उलझती, संभलती थी ”मनोरमा”।

”मनोरमा” की एक सबसे प्यारी मित्र या हमसफर थी– उसकी ”दैनंदिनी’। संपूर्ण चराचर व रित्यक्रम से निपटने के पश्चात् यह वह बेला थी जिसके साथ वह सांझा करती थी अपने द्वढ़ को अपनी कशमकश को जिसे वह चाहकर भी किसी से न कह पाती थी; इस आपाधापी में, भीड़ में, उसकी तनहाई कब शहनाईं बन जाती इसका बोध करवाती थी उसकी लेखनी। जिसे निकले उसके प्राणभेदी शब्द तो कभी संजीवनी बन उर्जा का संचार करती हुई बढ़ती, बदलती थी एक नयी ”मनोरमा” को उसकी ही “दैनंदिनी” से।

”मनोरमा” जो कि जननी थी एक नयी, नन्ही ”मनोरमा” की। जो कि मनोदर्पण था उसकी ही दैनंदिनी से उत्पन्न होती हुई, यह नयी ”मनोरमा” प्रत्युत्तर थी उसके मनोदैहिक जीव–जंजालो से परे, जिसमें समाहित थे सभी मनोवैज्ञानिक प्रश्नों से इत्र उसके पारिवारिक, सामाजिक, व्यवसायिक, व्यवहारिक, इकाई की पराकाष्ठा............।
”मनोरमा” का अकथ्य, अनछुआ कहीं की झटपटा रहा था ........... फड़फड़ा रहा था......आतुर था उसको प्रकट करने के लिए लेकिन कहाँ करे ? किससे करे ? कैसे करे ?

क्या वह जिस रूप में कहना व बोलना चाहती है; सामने वाला उसे सुन पाएगा समय का यदि अभाव न हो तो? क्या सामने वाला उसे उसी भाव में समझ पाएगा यदि उसके विचारों की परिपाटी संकुचित या थोपी हुई न हो तो ? इन्ही प्रश्नों के जंजालों और ऐसे ही अनेक अनकहे भावों में उलझती ........अपने द्वंड सवाल–जवाब दलिले देती बढ़ती चली जा रही थी ”मनोरमा”...............।

आखिर एक दिन उसे उत्तर मिल ही गया तो भी उसे उसकी “दैनंदिनी” द्वारा।
देखा। मिला ना जवाब जब फलक पर उतरे.......कलमबंद्ध हो उसकी लेखनी जब “मुखर मौन” बनकर, आत्मसात करती थी अपनी “दैनंदिनी” द्वारा।

यह “दैनंदिनी” ही तो थी जिसने ”मनोरमा” को एक और नयी ”मनोरमा” में तब्दील किया......एक नयी मनोरमा का सृजन किया। उत्तर मिला भी तो उसके अर्न्तमन में छिपी उसके सभी जटिलताओ और कश्मकश को तराशती व रिखारती......... उसकी दैनंदिनी। इसीलिए तो कहा बहने दो.........बढ़ने दो...........हर एक ”मनोरमा” को जिसे वह सांझा कर सकती है

केवल और केवल अपनी ‘लेखनी’ द्वारा। जिसकी आवाज बन शब्द रचते है......गढ़ते है एक नयी मनोरमा को केवल और केवल उसकी दैनंदिनी के मुक्त भाव से।

आवश्यकता है तो बस अपने अन्दर की उस ”मनोरमा” को पहचानने की जो कि परिलक्षित एवं प्रतिबिंबित होती है मात्र उसकी लेखनी में......उसकी दैनंदिनी में। जो कि निधि है उसके संचित जीवन पूंजी की.....जो कि आगाज़ है परिवर्तन की बयार मे परिष्कृत होती एक नयी ”मनोरमा” का।

एक ऐसी ”मनोरमा” जिसके आलिंगन में समाहित है सर्वहारा समूह के मध्य ”चरैवेति–चरैवेति” का भाव। जो आरंभ मे अपने ही द्वढं में जीवन धुरी से सामंजस्य बैठा रही थी या यो कहें समझौता कर रही थी?....... इस चिरंतन पथ प्रशस्त को, उसके वेग को गति देती उसकी ”दैनंदिनी”। अन्ततः उत्तर मिला वह भी ”चरैवेति–चरैवेति” का शुद्ध भाव चलना ही तो जीवन है। आरंभ भी आपा धापी, भाग दौड़ से हुई मनोरमा की......चलती चली जा रही मनोरमा को उत्तर भी मिला तो चलते–चलते अपनी दैनंदिनी से ही इसीलिए तो यह ‘मनोरमा’ कह रही है ”चरैवेति–चरैवेति” लेकिन किसके साथ एक क्षण ठहरो तो सही...... आत्ममंथन करो तो सही वह भी अपनी प्यारी ”दैनंदिनी” के साथ। चलिए मिलते है...... बढ़ते है......तराशते है नित नयी उभरती ‘मनोरमा’ के मनोदर्पण व उसके मनोभाव को उसकी ‘दैनंदिनी’ के साथ। इतनी मधुर तारतम्यता को वेग देती ऐसी हमारी ”मनोरमा”। पहचानो आप भी अपनी मनोरमा को तो शुरू करो अपनी दैनंदिनी के साथ.......मिलते है एक नयी ”मनोरमा” के साथ।

प्रियंका यादव
प्राथमिक शिक्षिका
संस्थान केन्द्रीय विद्याालय एस.एस.जी.सी.आइ.एस.एफ
सूरजपुर ग्रेटर नौएडा

भारत सरकार

वाणिज्य एवं उद्योग  मंत्रालयवाणिज्य विभाग ,

विकास आयुक्त का कार्यालय

नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

नौएडा दादरी रोड ,II– फेस ,नोएडा

जिला – गौतमबुद्ध नगर – 201305

**आपको हमारा "प्रेरणा" का पांचवा संस्करण कैसा लगा जरूर बताऐं। हम आपके सुझाव और सहयोग का स्वागत करेंगें साथ ही भविष्य में आप अपनी** कहानियाँ/कवितायेँ, चित्र, एसईजेड मे उल्लखनीय घटनाए, एसईजेड का प्रदर्शन, एसईजेड, ईओयू विदेश व्यापार निति, स्वछता, काम की नैतिकता, योग और फिटनेस, सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता, देश विधेयक "DESH विधेयक" अन्य के बारे में अपने लेख भेजते रहें, ऐसा हम आपसे उम्मीद करते हैं |

**सम्पादनः–**

**श्री ए बिपिन मेनन, विकास आयुक्त**

**श्री नितिन गुप्ता, उप विकास आयुक्त**

**श्री हरी किशन मीना, सहायक विकास आयुक्त**

**श्री अनुज दीक्षित, उच्च श्रेणी लिपिक**

**श्री कमल अहमद, वरिष्ठ कार्यकारी**

****************************

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग
विकास आयुक्त का कार्यालय
नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र
नौएडा दादरी रोड, फेस–II, नौएडा– 201305
फोन संख्या– 0120–2567268/69/70
फैक्स संख्या– 0120–2562314
नगर कार्यालयः– 8 जी, 8वां तल, हंसालय बिल्डिंग, 15 बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली–110001
**Email: dc@nsez.gov.in Website: www.nsez.gov.in**

# अधिकारियों की सूची

## नौएडा विशेष आर्थिक क्षेत्र

| क सं | अधिकारी का नाम | पद नाम | टेलीफोन संख्या | ई–मेल |
|---|---|---|---|---|
| 1. | श्री अ.बिपिन मेनन | विकास आयुक्त | 0120–2562315 | dc@nsez.gov.in |
| 2. | श्री सुरेन्द्र मलिक | संयुक्त विकास आयुक्त | 0120–2567274 | jdc@nsez.gov.in |
| 3. | श्री अमित कुमार गुप्ता | उपायुक्त (सीमा शुल्क) | 0120–2462667 | akgupta@nsez.gov.in |
| 4. | श्री नितिन गुप्ता | उप विकास आयुक्त | 0120–2567271 | ddc1@nsez.gov.in |
| 5. | श्री राजेश कुमार | उप विकास आयुक्त | 0120–2567275 | ddc2@nsez.gov.in |
| 6. | श्री किरन मोहन मोहाडिकर | उप विकास आयुक्त | 0120–2567273 | ddc3@nsez.gov.in |
| 7. | श्री अजय कुमार मिश्र | वरिष्ठ लेखा अधिकारी | 0120–2567270 | sr.ao@nsez.gov.in |
| 8. | श्री आर. के. शर्मा | सहायक विकास आयुक्त | 0120–2567270 | adc1@nsez.gov.in |
| 9. | श्री हरि किशन मीणा | सहायक विकास आयुक्त | 0120–2567270 | adc5@nsez.gov.in |
| 10. | श्री प्रकाश चन्द उपाध्याय | सहायक विकास आयुक्त | 0120–2567270 | adc3@nsez.gov.in |
| 11. | श्री प्रमोद कुमार | सहायक विकास आयुक्त | 0120–2567270 | adc4@nsez.gov.in |
| 12. | श्री राजेन्द्र मोहन कश्यप | सहायक विकास आयुक्त | 0120–2567270 | kashyap@nsez.gov.in |
| 13. | श्री मनीष अग्रवाल | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) नौ.वि.आ.क्षेत्र | 0120–2567270 | manish.agarwal@nsez.gov.in |
| 14. | श्री संजय शुक्ला | मूल्य निरूपक, नौ.वि.आ.क्षेत्र | 0120–2567270 | sanjay.shukla71@gov.in |
| 15. | श्री मुशीर अहमद खान | मूल्य निरूपक, नौ.वि.आ.क्षेत्र | 0120–2567270 | musheer.ahmad@nsez.gov.in |
| 16. | श्री सुधीर कुमार | मूल्य निरूपक, नौ.वि.आ.क्षेत्र | 0120–2567270 | cancer_kittu007@yahoo.co.in |
| 17. | श्री बाल किशन | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड | – | balkishan.g139301@gov.in |
| 18. | श्री सतीश चन्द्र बदलाकोटी | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड | – | satishbudlak.g139301@gov.in |
| 19. | श्री विशाल गुप्ता | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड | – | vishalgupta2903@rediffmail.com |
| 20. | श्री राजीव सक्सैना | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड | – | saxenarajiv007@gmail.com |
| 21. | श्री संजय राणा | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड | – | sanjay.rana334@gmail.com |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 22. | श्री सुजीत कुमार | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) प्राईवेट एसईजैड | – | kumarsujit.g139401@gov.in |
| | | **सीतापुरा (जयपुर) विशेष आर्थिक क्षेत्र** | | |
| 1. | श्री बुद्धि प्रकाश | उपायुक्त (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर) | 0141–2771744 | buddhi.prakash@gov.in |
| 2. | श्री पंकज शर्मा | सहायक विकास आयुक्त, सीतापुरा (जयपुर) | 0141–2770250 | adcjaipur@nsez.gov.in |
| 3. | श्री मनीष गोयल | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) सीतापुरा (जयपुर) | 0141–2770250 | manishgoyal40@gmail.com |
| 4. | श्री अशोक कुमार बंसल | मूल्य निरूपक, सीतापुरा (जयपुर) | 0141–2770250 | ashokkb.g209301@gov.in |
| 5. | श्री राजेश अग्रवाल | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर | 0141–6683400 | rajesha.co58801@gov.in |
| 6. | श्री अनिल गुप्ता | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर | 0141–6683400 | anilg446@gmail.com |
| 7. | श्री दिलीप पुनिया | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) महिन्द्रा जयपुर | 0141–6683400 | pooniazee@gmail.com |
| | | **मुरादाबाद, विशेष आर्थिक क्षेत्र** | | |
| 1. | श्री विकास | सहायक विकास आयुक्त, मुरादाबाद | 0591–2350001 | adc@moradabadsez.gov.in |
| 2. | श्री कुशल सिंह रावत, | मूल्य निरूपक, (सीमाशुल्क), मुरादाबाद | – | kushal@moradabadsez.gov.in |
| 3. | श्री भूषण शर्मा | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) मुरादाबाद | – | bhushan@moradabadsez.gov.in |
| | | **गुरूग्राम, विशेष आर्थिक क्षेत्र** | | |
| 1. | श्री वाई. के. कॉवरिया | सहा. आयुक्त (सीमा शुल्क) गुरूग्राम | – | Yoginder.kanwaria@gov.in |
| 2. | श्री आनंद कुमार वर्मा | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) गुरूग्राम | – | anand.78@gov.in |
| 3. | श्री पंकज नेगी | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) गुरूग्राम | – | pankajn.g089201@gov.in |
| 4. | श्री कृष्णकांत बशिष्ट | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) गुरूग्राम | – | krishnakb.g080901@gov.in |
| 5. | श्री राधेश्याम मिश्र | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) गुरूग्राम | – | rs.mishra1969@gov.in |
| 6. | श्री राकेश मनोचा | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) गुरूग्राम | – | rakeshm.g160901@gov.in |
| | | **मोहाली (पंजाब), विशेष आर्थिक क्षेत्र** | | |
| 1. | श्री करन गोयल | सहायक विकास आयुक्त, मोहाली (पंजाब) | – | karangoyal091@gmail.com |
| 2. | श्री संदीप कुमार | निर्दिष्ट अधिकारी, (सीमा शुल्क) चण्डीगढ | – | sandeep.kumar1965@gov.in |
| 3. | श्री मनीष भटनागर | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) चण्डीगढ | – | manish.bhatnagar@gov.in |
| 4. | श्री दीपक बजाज | अधीक्षक, (सीमा शुल्क) चण्डीगढ | – | deepaksuhail@gmail.com |

********